Chapter-4

चतुर्थ अध्याय

काव्य-कृतियों का अध्ययन

पूर्ववर्ती अध्याय के अंतर्गत यह निर्दिष्ट किया गया है कि राष्ट्रीय जागरण के परिवेश से पूर्णतया संपृक्त होकर पंडित सोहनलाल द्विवेदी निरन्तर जीवन-पथ पर अग्रसर रहे । साथ ही परिवेश गत प्रभाव तथा उसकी चेतना से सम्पृक्त होकर उनकी काव्य-यात्रा निरन्तर विकासोन्मुख रही । कवि की जीवनी और व्यक्तित्व से सम्बंधित अनेक सन्दर्भों से यह तथ्य स्पष्टत: प्रकाश में आता है कि समसामयिक स्वतंत्रता आन्दोलन के सेनानियों के कार्यों, स्वतंत्रता संग्राम से सम्बद्ध अनेक घटनाओं तथा जनमानस का नेतृत्व करने वाले प्रभावशाली व्यक्तियों ने जहाँ कवि की मान्यताओं को रूपायित किया वहाँ वे काव्य-रचना की मूल प्रेरणा भी बने । ये तथ्य उनकी अनेक रचनाओं की प्राय: विषयवस्तु बनते रहे ।

पूर्ववर्ती अध्याय में रचनाओं की जो सूची प्रस्तुत की गई है उनका काल-क्रम से यहाँ परिचय दिया जा रहा है जिसमें हम यह भी दृष्टिगत कर सकते हैं कि वे समकालीन सन्दर्भों से कितनी और किस रूप में जुड़ती हैं । कवि की बाल-साहित्य से सम्बंधित रचनाओं एवं संपादित ग्रंथों का परिचय अलग से अंत में दिया जाएगा ।

१-भैरवी :

पंडित सोहनलाल द्विवेदी की राष्ट्रीय रचनाओं का सर्वप्रथम प्रकाशित काव्य-संग्रह 'भैरवी' है । सन् १९४१ ई० में इंडियन प्रेस-प्रयाग के द्वारा प्रकाशित १३२ पृष्ठों की प्रस्तुत काव्य-कृति में कुल मिलाकर ३७ कविताओं को संकलित किया गया है जो कि विभिन्न घटना-प्रसंगों तथा देश की विभिन्न सम-विषम परिस्थितियों पर आधारित हैं । प्रस्तुत कृति में सोलह जागरण के गीत, छ: युगावतार बापू से सम्बंधित कविताएँ, चार सामाजिक व आर्थिक पक्षों से सम्बंधित कविताएँ, तीन ऐतिहासिक प्रसंगों से सम्बंधित, चार राष्ट्रीय-सांस्कृतिक नेताओं से सम्बंधित, एक माँ भारती की बन्दना से सम्बंधित तथा तीन फुटकल विषय पर रचित कविताएँ संकलित हैं ।

प्रारंभ में कवि माँ भारती की वंदना में अपना स्वर मिलाने[1] के पश्चात् युगावतार गांधी के चरणों में श्रद्धा-सुमन वितरित करते हुए `चल पड़े जिधर दो डग मग में, चल पड़े कोटि पग उसी ओर` कहकर बापू का युगीय महत्व प्रतिपादित करते हैं तो दूसरी ओर `खादी गीत` के द्वारा उनके स्वदेशी आन्दोलन के कार्यक्रम का महत्व ज्ञापन करते हैं । पूर्ववर्ती अध्याय में निर्दिष्ट किया जा चुका है कि उनका एतद्विषयक संस्कार किशोरावस्था से ही था ।

ग्रामीण जीवन से परिचित कवि को विश्वास है कि गांधी निर्दिष्ट मार्ग से ग्रामीण नर-कंकालों का उद्धार करने पर राष्ट्र स्वाधीन बन सकता है । तदर्थ रीढ़ की हड्डी के समान कृषकों को जागृत करने के यत्न के रूप में किसान काव्य लिखा गया है ।

पराधीनता कालीन राष्ट्र की विषम परिस्थितियों से व्यथित एवं चिंतित कवि राष्ट्रीय जागरण के महद् उद्देश्य से प्रेरित एकाधिक जागरण-गीत गाते हैं । `आजादी के फूलों पर`, `मधुर तकाजा`, `आज रुद्ध है मेरी वाणी`, `सुना रहा हूँ तुम्हें भैरवी`, `बढ़े चलो`, `विप्लव गीत` प्रभृति गीत प्रमाण के रूप में प्रस्तुत किये जा सकते हैं । उक्त गीतों का प्रमुख स्वर राष्ट्र के प्रति अनुरागमय श्रद्धा का भाव उत्पन्न कर उसके लिए त्याग एवं बलिदान की भावना, जागृत करना है । कवि का विश्वास है कि यदि राष्ट्र के तरुणों ने राष्ट्र का सूत्र अपने कठोर एवं दक्ष हाथों में ले लिया तो बर्बर एवं नृशंस जगत में मानवता स्थापित हो सकेगी। जीवन का लक्ष्य भोग-विलास युक्त जीवन यापन करना नहीं है अपितु राष्ट्र के लिए हँसते हुए आत्मसमर्पण करना है । `सुना रहा हूँ तुम्हें भैरवी` जागो मेरे सोनेवाले` वास्तव में राष्ट्रीय जागरण का शंखनाद करनेवाली भैरवी है । राष्ट्र के अतीतकालीन गौरव का स्मरण कराते हुए कवि वर्तमान विभीषिकाओं के विरुद्ध जन-मानस को झकझोर कर तैयार करने का यत्न

करते हैं । राष्ट्रीय जागरण के युग में एक ओर जहाँ गांधी जी राष्ट्र का नेतृत्व ग्रहण करके राजनीतिक धरातल पर जन समाज में चेतना भरने का यत्न करते हैं वहाँ दूसरी ओर द्विवेदी जी जनता की भाषा में, जनता की समस्याओं को जनता के लिए ही प्रस्तुत करते हुए उक्त कविताओं के माध्यम से राष्ट्र को जगाने का जागरूक प्रयास करते हैं क्योंकि उसका मूल स्वर राष्ट्रीय चेतना को उद्बुद्ध करने का है ।

विश्व विद्यालय कालीन 'राणा प्रताप', 'खादी गीत', 'चल पड़े जिधर दो डग-मग में', 'फूलों भरा जनाजा', आदि उनकी प्रसिद्ध रचनाएं जिन पर पूर्ववर्ती अध्याय में हम विचार कर चुके हैं, प्रस्तुत काव्य-कृति में संकलित की गई हैं । 'भैरवी' के अनेक गीत तत्कालीन राष्ट्रीय परिस्थितियों की उपज हैं । राष्ट्रीय जागरण से सीधा सम्बंध रखनेवाले इन गीतों ने अनुकूल वातावरण तैयार करने में अपूर्व योगदान दिया है । राष्ट्रीय चेतना को जागृत करने के उद्देश्य से प्रेरित कवि एक ओर राजनीतिक नेता बापू, जवाहर, मालवीय जी बीर सुभाष आदि नेताओं के कृतित्व की सराहना करते हैं तो दूसरी ओर अतीत के उज्ज्वल नररत्नों राणाप्रताप, बुद्धदेव, तुलसीदास प्रभृति के राष्ट्रीय-सांस्कृतिक महत्त्व प्रतिपादित करते हुए उनके बलिदानों की याद दिलाते हैं ।

'भैरवी' के विषयवस्तु और उसके प्रमुख स्वर के संदर्भ में 'युगाधार' के वक्तव्य में अपना अभिमत कुछ इसी प्रकार व्यक्त करते हैं, 'भैरवी' में मैंने राष्ट्र के जीवन , जागरण एवं बलिदान के जीवित चित्रों को काव्य का रूप देने का प्रयास किया है । समाज को मैंने आग्रहपूर्वक राष्ट्र का क्रान्ति-गायन सुनाया है ।'[२]

अपनी रचनाओं की प्रभावक्षमता एवं प्रसाद, मधुर व ओज गुणों से संश्लिष्ट होने के कारण प्रकाशित होते ही 'भैरवी' पाठकों का कण्ठहार बन गई । गुप्त जी की 'भारत-भारती' की तरह 'भैरवी' को भी जन-मानस के द्वारा समुचित सम्मान प्राप्त हुआ। वह जागरण का प्रतीक बन गई ।

२-वासवदत्ता :

सन् १९४२ ई० में इंडियन प्रेस-प्रयाग द्वारा प्रकाशित यह आठ छोटी-बड़ी कविताओं का संग्रह है और ये सभी कथाश्रित हैं । `एक बूँद` कल्पना पर आधारित अन्योक्ति है तथा शेष सात रचनाओं की सामग्री इतिहास तथा पौराणिक साहित्य से ली गई है । यह उल्लेखनीय है कि `भिक्षा प्राप्ति` शीर्षक कविता को छोड़कर शेष रचनाएँ `वासवदत्ता` नामक कविता से आकार में बड़ी हैं किन्तु इसके बावजूद भी कवि ने संग्रह का नाम `वासवदत्ता` ही रखा है । कवि के निजी वक्तव्य से यह तथ्य प्रकाश में आता है कि जीवनादर्श और तद्गत मूल्यों की प्रतिष्ठा के दृष्टिकोण से वासवदत्ता का कथानक उसे उत्कृष्ट जान पड़ा ।[३] वैसे आठों कविताओं के कथानकों की उत्कृष्टता द्वारा कवि के प्रभावित होने और उससे प्रेरणा ग्रहण करने के तथ्य को अपने आमुख में स्वीकार किया ।[४]

`वासवदत्ता` संग्रह की कविताओं के विषय में सर्वाधिक उल्लेखनीय तथ्य यह है कि इसकी कविताएं `भैरवी` की भाँति राष्ट्रीय जागरण तथा आन्दोलनों की देन नहीं है । इनमें प्राय: साँस्कृतिक पुनरुत्थान का स्वर ही प्रधान है । भारतीय संस्कृति के उदात्त चरित्रों का रेखांकन इसे प्रमाणित कर देता है । इन आठ काव्य-प्रबंधों में से चार बौद्धकालीन हैं, दो पुराण-साहित्य के, एक राजपूत इतिहास तथा एक काल्पनिक है । मूल चेतना के दृष्टिकोण से पाँच में काम पर विजय, एक में सुदृढ़ स्वामिभक्ति, एक में दान का आदर्श तथा एक में करुणा की भावना के उदात्त चित्र हैं । इस प्रकार प्रधानता वासना को दबाकर आत्मशक्ति के विकास की कही जा सकती है । अत: यह स्पष्ट है कि `वासवदत्ता` की भाव-योजना `भैरवी` से किंचित भिन्न है । स्वयं द्विवेदी ने भैरवी से वासवदत्ता की ओर उन्मुख नये पदन्यास के विषय में इस प्रकार स्वीकार किया है -

`भैरवी` के साथ मेरी रचनाओं का एक युग समाप्त होता है। `वासवदत्ता`

में मेरी कविता का नवीन युगारंभ है । 'भैरवी' में जहाँ इस युग की गतिविधि एवं प्रगति का चित्रण है, 'वासवदत्ता' में वहाँ युग-युग की संस्कृति को अंकित करने का प्रयत्न है ।'[५]

उपर्युक्त वक्तव्य से भी स्पष्ट है कि इसकी कविताएँ राष्ट्रीय जागरण के स्थान पर साँस्कृतिक पुनर्जागरण की प्रवृत्ति का द्योतन करती हैं । उनमें कवि की साँस्कृतिक दृष्टि का प्रतिफलन हुआ है, यद्यपि जैसा कि आमुख से स्पष्ट है कि वह दृष्टि पूर्णतया आदर्शवादी है । विशेषकर 'वासवदत्ता', 'उर्वशी', 'कर्ण और कुन्ती', 'एक बूँद', 'भिक्षाप्राप्ति' जैसी रचनाएं जीवन-मूल्यों तथा मानवतावाद की प्रतिष्ठा करती हैं, तो दूसरी ओर 'सरदार चूड़ावत' की कथा हमें राजपूत क्षत्राणी के तेजदृप्त गौरव गाथा को उजागर करती है । अतः निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि इस 'वासवदत्ता' की समस्त कविताओं का प्रधान स्वर साँस्कृतिक है जिनमें उज्ज्वल अतीत के प्रति अनुराग एवं गौरव की भावना है और साथ ही साँस्कृतिक जीवन मूल्यों की प्रतिष्ठा का एक उन्मेष भी है । राष्ट्रीय जागरण के सन्दर्भ में यही कहा जा सकता है कि इनमें उसके प्रेरणादायी वैचारिक पक्ष को लक्ष्य किया जा सकता है ।

३-कुणाल :

क्रम विकास की दृष्टि से 'कुणाल', 'भैरवी' तथा 'वासवदत्ता' के पश्चात् की रचना है । 'वासवदत्ता' में कुणाल की संक्षिप्त कथा लिखकर उसकी चारित्रिक विशेषता का उद्घाटन कवि कर चुका है तथापि उस पर स्वतंत्र रूप से बृहद् खण्ड काव्य लिखने का आशय स्पष्ट करते हुए कवि 'कुणाल' के निवेदन में कहते हैं, 'इस प्रबन्ध के लिखने का एक मात्र मेरा उद्देश्य यह है कि यह समाज के युवकों के चरित्र-निर्माण में सहायक हो ।'[६] इससे सिद्ध होता है कि 'वासवदत्ता' की तरह 'कुणाल' का मूल स्वर भी साँस्कृतिक पुनर्जागरण की प्रवृत्ति का द्योतन करता है । साँस्कृतिक जागरण से सम्बंधित दो रचनाओं को एक साथ प्रकाशित

करने पर कवि का यह तथ्य प्रकाश में आता है कि संभवत: राजनीतिक जागरण के साथ-साथ सांस्कृतिक जागरण लाने पर ही सच्चे अर्थों में राष्ट्रीय चेतना उद्बुद्ध हो सकती है। राष्ट्र का चरित्र जितना सशक्त होगा चेतना उतनी ही आत्मशक्ति पर निर्भर होगी। सच्ची स्वाधीनता तभी लायी जा सकती है।

कुणाल का कथानक ऐतिहासिक है किन्तु उसका प्रामाणिक वृत्त अप्राप्य होने के कारण कवि ने काल्पनिक कथा-संघटनों के आधार पर इसके कथानक का ताना-बाना बनाया है जो सोलह सर्गों में विभाजित है। सर्गों की संख्या और उसके प्रारूप को देखकर इसे महाकाव्य कहा जाना चाहिए किन्तु इसमें कुणाल के जीवन से सम्बंधित एक मात्र घटना का विशद चित्रण है। यथा-'सौतेली माँ तिष्य रक्षिता के वासनाजन्य प्रणय निवेदन का कुणाल के द्वारा सविनय अस्वीकार और तिष्यरक्षिता की आक्रोशपूर्ण प्रतिक्रिया का कुणाल को शिकार बनाना।' अतएव इसे महाकाव्य नहीं, खण्डकाव्य ही कहना उचित है जो एक सफल रचना है।

प्रथम चार सर्गों तक कवि ने कुणाल के तारुण्य काल तक की पृष्ठभूमि ही प्रस्तुत की है जो अपेक्षाकृत अधिक लम्बी हो गई है। उसके रंगमंचीय अभिनय और रूप लावण्य पर आकृष्ट तिष्यरक्षिता के अंग प्रत्यंग में उत्पन्न प्रणयोद्भव का वर्णन पंचम सर्ग में किया गया है जो एक बिंदु का काम करता है। वस्तुत: कार्य(*Action*) का प्रारंभ षष्ठ सर्ग से होता है जहाँ अशोक-पत्नी (कलिंग कन्या) कुणाल से प्रणय-निवेदन करती है। उसके अंग प्रत्यंग की कृशता और कामांध मादकता का प्रकृति के उपादानों के माध्यम से कवि ने अच्छा वर्णन किया है। किंतु वन्दनीय माता के रूप में देखनेवाले कुणाल ने जब उन्हें सावधान करते हुए सविनय उस प्रणय-निवेदन का अस्वीकार किया तब मर्माहित तिष्यरक्षिता प्रतिशोध का आक्रोश युक्त प्रदर्शन करती दिखाई गई है। यद्यपि 'अनुताप' नामक सप्तम सर्ग में

कवि ने तिष्यरक्षिता के सात्विक एवं निष्कलुष मानस के उज्ज्वल पक्ष का भी प्रदर्शन कराया है, तथापि प्रतिशोध नामक अष्टम सर्ग में उसके ठीक विपरीत असूया एवं ईर्ष्या से परिपूर्ण प्रतिशोधात्मक मानस के विकृत रूप का प्रदर्शन किया है। नारी चरित्र के द्वारा राजा अशोक से एक सप्ताह के लिए शासन सूत्र हाथ में लेकर कुणाल और कांचना को भिक्षु बनाकर निर्वासित करा देने का राजदण्ड भी घोषित कर देती है । संदेशवाहक मृत्य की अनिच्छा किन्तु विवशता का वर्णन कर कवि ने प्रसंगानुरूप पराधीनकालीन मनुष्यों की विवशता की ओर भी संकेत किया है । दशम सर्ग में राजाज्ञानुसार कुणाल-कांचना को निर्वासित करते समय राम-सीता के वन-गमन प्रसंग का-सा दृश्य उपस्थित करके निर्दोष चरित्रों के प्रति अन्यायपूर्ण व्यवहार के विरुद्ध जनता का संवेदजन्य वातावरण की सृष्टि करने का कवि का प्रयास दृष्टिगत होता है । `पथ गीत`, `प्रत्यागमन` तथा `पुनर्मिलन` जैसे तीन सर्गों में संक्षिप्त कथा रखकर शीघ्र ही कुणाल-कांचना का पिता से पुनर्मिलन कराया है । छलछद्मयुक्त कथा सुनने पर पिता अशोक का आक्रोश युक्त व्यवहार दिखाते हुए तिष्यरक्षिता को प्राणदण्ड का आदेश सुनाया गया है किन्तु कुणाल के ही द्वारा क्षमा-दान की प्रार्थना कराते हुए कवि ने त्याग एवं क्षमा जैसे उदात्त गुणों से युक्त उसकी चारित्रिक श्रेष्ठता को ही द्योतित किया है जो कवि का मूल प्रतिपाद्य है । अंत में अशोक और तिष्यरक्षिता का काषाय वस्त्र धारण कर वनगमन करने तथा कुणाल-कंचना का राज्य-भार निर्वहण करने का वर्णन है ।

सारांशतः यह रचना चरित्र-नायक कुणाल के उदात्त चरित्र का सफल उद्घाटन करती है । सांस्कृतिक जीवन मूल्यों की प्रतिष्ठा ही सांस्कृतिक पुनरुत्थान का प्रमुख स्वर है जो प्रस्तुत कृति में भली भाँति प्रदर्शित किया गया है । यह कृति भी `वासवदत्ता` की तरह चारित्रिक उदात्तता की प्रेरणा देती है जिससे राष्ट्रीय चरित्र निर्माण का कवि का मूल उद्देश्य सिद्ध होता है । राष्ट्रीय चेतना को उद्बुद्ध

करने के महायज्ञ में उक्त दोनों कृतियाँ प्रकारांतर से समिधा का कार्य करती हैं ।

४- चित्रा :

'चित्रा' द्विवेदी जी के साहित्यिक गीतों की काव्य-कृति है । सन्१९४३ ई० में अवध पब्लिशिंग हाउस, लखनऊ से सर्वप्रथम प्रकाशित प्रस्तुत कृति का पंचम् संस्करण जो इंडियन प्रेस-प्रयाग से प्रकाशित हुआ उसमें ८६ पृष्ठों के अंतर्गत कुल मिलाकर ४८ गीतों को संकलित किया गया है । इसमें एक रंगीन चित्र भी है जिसमें विषपान करनेवाले भगवान शंकर को एक विशिष्ट मुद्रा में चित्रित किया गया है जिसके नीचे ये पंक्तियां लिखी गई हैं :-

'जो पीता हो विष का प्याला
समझ अनूठी मादक हाला ।'

'चित्रा' का प्रमुख स्वर प्रणय गीतों की सर्जना करना है । राष्ट्रीय जागरण के प्राण-प्रश्न के साथ इसका कोई सम्बंध नहीं है । ऐसा प्रतीत होता है कि छायावादी शैली को अपनाकर प्रणय-गीत लिखने की निजी क्षमता को सिद्ध करने का न केवल इसमें प्रयास है, अपितु छायावादी कवियों की प्रणयगीत सर्जन की चिन्तन-प्रक्रिया में आवश्यक सुधार लाने का एक विनम्र प्रयास है । द्विवेदी जी की प्रणयाकांक्षा स्वसुख एवं ऐन्द्रिय सन्तोष पर केन्द्रित वासनाजन्य एवं मांसल नहीं है, अपितु सूरदास की गोपियों की तरह तत्सुख चिन्तन पर आधारित उदात्त कोटि की है । चित्रा के प्राय: सभी गीत उक्त चिन्तन-प्रक्रिया से युक्त हैं। इनमें प्रणय के पूर्वार्द्ध एवं उत्तरार्द्ध तथा प्रणयकालीन त्रिविध मन: स्थितियों का सटीक चित्र अंकित किया गया है । कवि समस्त प्रकृति में व्याप्त प्रियतम के विविध रूपों को अपने मन: प्राणों में समा लेना चाहते हैं ।

राष्ट्रीय जागरण, जीवन एवं बलिदान के स्वर को उभारने में सचेष्ट कवि

मधुपों का गुंजारव, मृदुल पलकों का स्वप्न, हृदय की कामनाओं तथा रंगीन कल्पना के मधुर रूपों के माध्यम से आया ही है, कवि को प्रियतम की उपस्थिति एवं मिलन सुख का अनिर्वचनीय अनुभव प्रदान करता है। प्रेमी-प्रियतम का यह संवाद नाटकीय चित्र उपस्थित करता है। 'चित्रा' की तरह संयोगकालीन मस्ती के कारण प्रेमी-प्रियतम को प्रकृति का प्रत्येक कार्य-व्यापार अपने रंग में रंगा दृष्टिगत होता है।

संयोगजन्य मधुमय व्यापार, जो क्षणिक होता है, के पश्चात् जीवन को झुलसा देनेवाला दीर्घकालीन विरह जन्य दु:ख आता है। 'चित्रा' में विप्रलंभ शृंगार जन्य गीत नहीं हैं। इस दृष्टि से वासन्ती में प्रेम का सर्वांगीण चित्रण दृष्टिगत होता है। सामान्यत: विरह की आग में संतप्त प्रेमी प्रियतम के पुन: साक्षात्कार की अहर्निश कामना करता है, किन्तु द्विवेदी जी का कवि प्रियतम के पुनरागमन को बलात् रोकता है। 'चित्रा' के सन्दर्भ में जिसका उल्लेख किया जा चुका है, तत्सुख का चिन्तन करनेवाला कवि चिन्तित है कि उनका प्रियतम कहीं अपनी विरहजन्य दहनशील आग की लपटों में झुलस न जाय।[7] यह ध्यातव्य है कि कवि प्रियतम को प्राणपण से प्रेम करता है जिसकी अनुपस्थिति में उनके लिए संसार असार है और उपस्थिति में सर्वंगार है, तथापि अपने विरह की चरम सीमा में प्रियतम के ही सुख का चिन्तन करके प्रेम के विशुद्ध रूप का प्रतिपादन करना कवि का अभीष्ट है। प्रेम के उभय पक्षों को चित्रित कर उसके उदात्तीकरण की ओर संकेत करने का यत्न प्रस्तुत कृति का प्रतिपाद्य है। कवि के इन प्रणय गीतों की महती विशेषता यह है कि इसमें भावों का निष्कलुष उभार है, ऊष्मा है, सरसता है। प्रिय मिलन की तमन्ना है, तन-मन-प्राणों के एकीकरण की ललक है। उर्ध्वीकृत मनोवृत्तियों का पुनीत प्रदर्शन है।

निष्कर्ष यह कि कवि के मानस पर छायावादी युग का स्पष्ट प्रभाव

इसमें परिलक्षित होता है । राष्ट्रीय जागरण के अभियान से `चित्रा` और `वासन्ती` का कोई सम्बंध नहीं है । हाँ, प्रेम का उदात्त चित्रण इसमें अवश्य मिलता है ।

६- प्रभाती :

सन् १९४४ ई० में साहित्य भवन प्रा० लिमिटेड, इलाहाबाद से प्रकाशित `भारती` राष्ट्रीय जागरण से संबंधित कविताओं का कवि का दूसरा काव्य संग्रह है । कुल इक्यानबे पृष्ठों में छपी इस पुस्तक में चौंतीस कविताओं को संकलित किया गया है । यह युगीन राष्ट्रीय आवश्यकताओं की पूर्ति की सशक्त काव्य-कृति है ।

मार्क्सवादी चिन्तन के आधार पर प्रगतिवादी चिन्तन हिन्दी साहित्य में बड़े उत्साह के साथ अपनाया जा रहा था जो छायावादी चिन्तन के विरुद्ध प्रतिक्रिया के रूप में भी था । जिसका विवरण द्वितीय अध्याय के अंतर्गत प्रसंगानुकूल दिया जा चुका है । शताब्दियों से उपेक्षित, तिरस्कृत एवं शोषित नर-कंकालों के प्रति सहानुभूति एवं उत्कर्षमूलक प्रयोगों का वह युग था । इसे नवयुग का आगमन मानकर युगीन सन्दर्भों में राष्ट्रीय जागरण के लिए आवश्यक भाव-भूमि का निर्माण एवं समुचित विस्तार `प्रभाती` की कविताओं का मुख्य विषय है ।

- `ओ नवयुग के कवि जाग ! जाग !`, `भावों की रानी से` जैसी कविताओं के द्वारा अपने भावों को युगानुकूल बदलते हुए नवीन युग के प्रभात का स्वागत करने के लिए उपदिष्ट करते हुए दृष्टिगत होते हैं जो कवि के द्वारा `प्रभाती` की भूमिका में व्यक्त विचारों से भी प्रमाणित होता है -,`

`आज हमें उस काव्य के चमत्कार की आवश्यकता नहीं जो पंडित मंडली का ही अनुरंजन कर सकता है, जिसके सूक्ष्मातिसूक्ष्म भावों का ऊहापोह देखकर प्रतिभा

की प्रखरता पर हम प्रशंसा के पुल बांधते आये हैं । काव्य के चमत्कार का युग गया। आज तो हमें इन कोटि-कोटि भाई-बहनों के भावों को संसार के सम्मुख रखना है, जिसे वे नहीं रख सकते । ----- शताब्दियों से उपेक्षित, तिरस्कृत एवं बहिष्कृत जनता के लिए हम लिखें और उनकी भाषा में लिखें जिसे वे समझ सकें । आज हमारे राष्ट्र की मांग रही है कि हम जनता के लिए साहित्य सृजन करें । इस दृष्टि से प्रारंभ से ही `बहुजनहिताय` लिखने की मेरी चेष्टा रही है ।`[८]

`भैरवी` की तरह प्रस्तुत संग्रह की रचनाओं में भी कवि ने विषय-वस्तु के प्रस्तुतीकरण के लिए दो पद्धतियों का निर्वहण किया है । यथा- एक ओर अतीतकालीन भारतीय संस्कृति की गौरवगाथा गाते हुए उज्ज्वल घटना-प्रसंगों एवं ज्योतिर्धरों के जीवनादर्शों से सम्यक प्रेरणा प्रदान करना तथा दूसरी ओर वर्तमान-कालीन भारतीय जन-समाज की दुर्दशा एवं उससे उन्मुक्त होने के लिए सच्चे अर्थ में प्रयत्नशील युगनेता बापू के सशक्त और सफल नेतृत्व का विराटत्व प्रस्तुत करते हुए उन्हीं का मार्गानुसरण करने को उपदिष्ट करना । `प्रभाती` में संकलित कतिपय रचनाएँ उक्त तथ्य को प्रमाणित करती हैं । बापू, भगवान बुद्ध, विक्रमादित्य, तुलसीदास, रत्नाकर, प्रसाद, प्रेमचंद प्रभृति राष्ट्रीय, साँस्कृतिक व साहित्यिक मनीषियों के गौरवपूर्ण चरित्र अंकित करके राष्ट्र-निर्माण के नूतन प्रभात में एक ओर उनसे सम्यक प्रेरणा ग्रहण करने का प्रयास है तो दूसरी ओर `बुभुक्षित बंगाल`, `सेवाग्राम` जैसी रचनाओं के माध्यम से दरिद्रनारायणों के उद्धार का सजग प्रयास दिखाया गया है । `सेवाग्राम` तो समूचे राष्ट्र के उद्धार के लिए तथा जनता के दु:ख-दारिद्रय के निवारणार्थ विचार-विमर्श करने तथा तदनुकूल कार्य करने का केन्द्र ही बन गया था जो बापू की उपस्थिति में संचालित होता था । तभी तो कवि सेवाग्राम की महत्ता का गान प्रभावोत्पादक शैली में तथा बड़े मनोयोग के साथ करते हैं ।

निष्कर्ष यह कि `प्रभाती` नूतन युग के स्वागत की एक ऐसी कृति है

जिसमें युगीन आशा-आकांक्षाओं की पूर्ति का नवीन विचारों एवं उमंगों के साथ चित्रण हुआ है । अर्थात् उसमें जनता के दुखदर्द को समझना और उसके समाधान के लिए प्रयत्नशील रहते हुए उससे आत्मीयतापूर्ण संपर्क स्थापित करने का सुंदर साहित्यिक प्रयास है । राष्ट्रीय जागरण से सम्बद्ध आंदोलन से इस कृति का सीधा संबंध है जिसकी रचनाओं ने आवश्यक वातावरण की सृष्टि करने में अपना योगदान दिया है ।

७-पूजागीत :

'पूजागीत' भी सन् १९४४ ई० में इंडियन प्रेस-प्रयाग द्वारा प्रकाशित द्विवेदी जी की तृतीय राष्ट्रीय काव्य-कृति है । एक सौ तेरह पृष्ठों की इस पुस्तक में कुल मिलाकर छप्पन कविताएँ संकलित हैं । 'पूजागीत' वस्तुतः 'यथानामो तथा गुणाः' जैसी काव्य कृति है । इसमें माँ भारती की वंदना, अर्चना और अभ्यर्थना के गीत सुमन वितरित किये गये हैं । 'भैरवी' और 'प्रभाती' में कवि अपेक्षाकृत बहिर्मुखी अधिक हैं, किन्तु 'पूजागीत' में आकर आत्मस्थ होते हुए 'जननि जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरियसी' की भावात्मक अनुभूति करते दृष्टिगत होते हैं । उनके लिए मातृभूमि ही सर्वस्व है जिसके संदर्भ में पूर्ववर्ती पृष्ठों में उल्लेख किया जा चुका है। उसकी दुर्दशा उनसे देखी नहीं जाती । तदर्थ बड़ी व्यथा के साथ उसका दैन्य तथा दारिद्र्य से परिपूर्ण चित्र उपस्थित करने के पश्चात् आशा और आस्था के कवि बड़ी ओजपूर्ण शब्दावली में अपनी अपरिमित शक्ति की याद दिलाते हुए त्रिशूल-पाणि माँ धरित्री को त्रि-शूल का विनाश करने के लिए प्रार्थना करते हैं । साथ ही माँ को अतीतकालीन गौरवमय रूप में पुनः देखने की कामना करते हैं ।

तत्पश्चात् माँ की उक्त दयनीय स्थिति से उसे उन्मुक्त करने के लिए देश के तरुणों को कर्तव्य-भान कराते हुए जागरण विषयक अनेक कविताएँ लिखते हैं जिनमें 'जागो सोये देश,' 'जाग जनगण' 'ओ जवानी जाग' आदि उल्लेखनीय हैं ।

इन गीतों में देश की खोयी हुई जवानी को पूर्ण आशा और आस्था के साथ ओजपूर्ण शैली में जगाने का सशक्त प्रयास दृष्टिगत होता है। साथ ही राष्ट्रीय कार्यों के लिए गृहत्याग करते समय तरुण की द्विधात्मक मन:स्थिति (राग या त्याग) का चित्रण और अंत में त्याग को ही प्राधान्य देते हुए 'आज रण की ओर जाऊँ' जैसे काव्य में तरुण की निश्चयात्मक मन:स्थिति का चित्रण बड़ा ही प्रभावोत्पादक रहा है।

शेष इक्कीस गीतों में कवि राष्ट्र के नव-निर्माण और उसकी मंगल-कामना करने की चेष्टा करते हैं। कवि को श्रद्धा ही नहीं विश्वास भी है कि माँ के लिए अनुरागमय स्वार्पण से ही राष्ट्र का नव-निर्माण हो सकता है। बलिदानी भावना लिए हुए नवयुवकों का परिश्रम कभी असफल नहीं होता। उन्हीं के दक्ष हाथों में राष्ट्र का सूत्र रहने पर नवीन राष्ट्र की मंगलकामना की जा सकती है। 'विश्व में हो मंगल कल्याण' इसका प्रमाण प्रस्तुत करती है।

निष्कर्षत: यह कहा जा सकता है कि 'पूजागीत' माँ भारती की पूजा, वंदना के अतिरिक्त उसकी दयनीय स्थिति की कारुणिक मूर्ति का चित्र उपस्थित कर उसके उद्धार की मनोकामना व्यक्त करने वाले गीतों का संकलन है। इन गीतों में कवि के अंतरतम की संवेदना है, सच्चाई है और रागात्मक आत्मीयता की झलक भी। भावपक्ष के साथ-साथ कला पक्ष भी विकसित हुआ है। 'भैरवी' की तुलना में इनमें कवित्व और कलात्मकता अधिक दीखती है। युगीन संदर्भों में यह कृति अपना विशिष्ट स्थान रखती है और स्वाधीनता प्राप्ति के निर्धारित लक्ष्य की पूर्ति की दिशा में पर्याप्त सहायभूत हो सकी है।

८- युगाधार :

सन् १९४४ ई० में सर्वप्रथम अवध पब्लिशिंग हाउस, लखनऊ से यह काव्य-

संग्रह प्रकाशित किया गया था । अद्यावधि इसके कतिपय संस्करण निकल चुके हैं । इसका संशोधित तथा परिवर्धित चतुर्थ संस्करण सन् १९५१ ई० में निकला था जिसमें तैंतीस कविताएँ संकलित हैं ।

इस संग्रह की प्रथम आठ तथा आगे चलकर २५ वीं रचना इस संशोधित और परिवर्धित संस्करण की तैंतीस कविताओं में से नौ कविताएँ राष्ट्रपिता - महात्मा गांधी के व्यक्तित्व को केन्द्र में रखकर प्रस्तुत हुई हैं । भूमिका में दिये गये कवि के वक्तव्य के अनुसार 'भैरवी' में मैंने राष्ट्र के जीवन, जागरण एवं बलिदान के जीवित चित्रों को काव्य का रूप देने का प्रयास किया है । समाज को मैंने आग्रहपूर्वक राष्ट्र का क्रांति-गायन सुनाया है । 'युगाधार' में युग की राजनैतिक, आर्थिक, धार्मिक एवं सामाजिक जन-क्रांतियों की चिनगारियां कैसे कहूं, धूम्र रेखाएं हैं ।'[६] उपर्युक्त वक्तव्य में कवि ने भैरवी और युगाधार के बीच एक विभाजक रेखा खींचने का प्रयास किया है किन्तु वस्तुस्थिति यह है कि राष्ट्र के जागरण एवं बलिदान के जीवित चित्र युगाधार की कविताओं में कम नहीं हैं । यह अवश्य है कि 'हलधर है', 'मजदूर', 'ओ नवजवान', 'आत्मबोध', 'कार्ल मार्क्स' जैसी रचनाएँ आर्थिक और सामाजिक पक्षों से सम्बंधित हैं । इन पांच और उपर्युक्त नौ रचनाओं को छोड़कर शेष उन्नीस रचनाएं या तो राजनीतिक चेतना को लेकर अथवा तो राष्ट्रीय आन्दोलन के किसी पक्ष या घटना विषयक चेतना को रूपायित करती हैं । राजनीतिक चेतना की रचनाएँ जागरण और बलिदान को अपने आप में समेटे हुए हैं । अत: 'भैरवी' की काव्य यात्रा की दिशा में कुछ अन्य भूमियों का स्पर्श करता हुआ कवि का पदन्यास युगाधार की कविताओं के माध्यम से प्रकाश में आता है । उनकी अनेक कृतियों में गांधी जी के व्यक्तित्व, कार्यक्रम तथा विचारधारा की बारम्बार अभिव्यक्ति त हमें उन्हें गांधीवादी भावधारा के कवि मानने का आधार प्रदान करती है किन्तु इन्हीं संग्रहों में नेता जी सुभाष जैसे जन-नायकों, जो गांधीवाद पर विश्वास नहीं करते थे, के महत्व की स्वीकृति

विषयक कविताएँ भी यत्र-तत्र मिलती हैं। `महाभिनिष्क्रमण` शीर्षक कविता इसका एक सशक्त उदाहरण है। नयी आर्थिक चेतना को अभिव्यक्त करनेवाली `हलधर से`, `मजदूर`, `जागो, हुआ बिहान`, `बेतवा का सत्याग्रह`, `कार्ल मार्क्स के प्रति` शीर्षक कविताएँ भी इस संग्रह में हैं जिनमें किसान, मजदूर और जन-साधारण तथा उसके उन्नायकों के महत्व-ज्ञापन का स्वर प्रधान है।

अत: समग्रतया विचार करने पर यह कहना अधिक समीचीन होगा कि आर्थिक सामाजिक चेतना की झाँकियाँ उनकी राष्ट्रीय चेतना की अंग मात्र हैं। संभवत: इसीलिए स्वयं कवि ने इन कविताओं को युग की राजनीतिक, आर्थिक, धार्मिक एवं सामाजिक जनक्रांतियों की चिनगारियाँ या धूम-रेखाएँ[20] कहा है जो आर्थिक, सामाजिक चेतना की गौणरूप में अभिव्यक्ति का परिचायक है।

६-विषपान :

`विषपान` सन् १९४६ ई० के जनवरी मास में सर्वप्रथम इंडियन प्रेस-प्रयाग द्वारा प्रकाशित हुई थी। सन् १९५५ ई० में भी इसी प्रेस द्वारा पुन: प्रकाशित हुई।

द्विवेदी जी की प्रस्तुत काव्य-कृति में सुरासुरों के द्वारा अमृत-प्राप्ति की पौराणिक सुप्रसिद्ध कथा को एक विशेष दृष्टिकोण से संगुंफित किया गया है। परम उपकारक शंकर का समुद्र से प्राप्त कालकूट विष का पान करने का उपक्रम इसमें दिखाया गया है। यह एक खण्ड काव्य है और उसकी कथा को नौ लघु खण्डों में विभाजित किया गया है। अनवरत चलनेवाले देवासुर संग्राम में देवों की पराजय और असुरों की विजय दिखाई गई है। चिंतित और शोकमग्न देवों को समुद्र-मंथन करके अमृत-पान करने के लिए कटिबद्ध होनेकी आकाशवाणी सुनाई पड़ती है। मुर्दों में जैसे नवीन प्राण-संचार हो जाता है। फलत: देव हर्षोल्लसित होकर दानवों के सम्मुख जाकर अमृत-संचय का प्रस्ताव रखते हैं जिसे दानवाधिराज

बलि सहर्ष स्वीकार करते हैं। तदर्थ उभय पक्ष में अमृत-प्राप्ति की कल्पनाजन्य अनुरागमयी उत्कंठा परिलक्षित होती है। अन्ततोगत्वा अमृत-अभियान की स्पृहा लेकर सभा विसर्जित होती है। अब तो सभी उद्देश्य की पूर्ति के लिए आवश्यक शस्त्रास्त्र लेकर अभियान गीत गाते हुए महासिंधु के तट तक पहुंचते हैं। सोत्साह अविलंब उद्यम करने का संकल्प लिए उभय पक्ष तत्पर हो जाता है। मंदराचल को मंथन-दण्ड और शेषनाग को रज्जु बनाकर दोनों समुद्र-मंथन के नियोजित कार्य को सोत्साह पूर्ण करने का उपक्रम करते हैं। महोदधि को मथते-मथते अचानक भूतल से अमृत की अपेक्षा कालकूट-महाविष प्रस्फुटित होता है जिसके परिणाम स्वरूप समस्त वातावरण में उसकी भयंकर विषैली लहरें परिव्याप्त होने लगती हैं। सुर-असुर दोनों भयभीत होकर अपने प्राणों की सुरक्षा के हित 'त्राण करो, त्राण करो' की कातर -करुण पुकार करते हुए इधर-उधर भागने लगते हैं। अन्ततोगत्वा दोनों मिलकर करुणाकर शंकर से अनुनय ~~कर~~ करते हुए प्रार्थना करते हैं। फलतः भगवान शंकर बहुजन हिताय विष का पान करके उभय-पक्षीय व्यथा को दूर करने का वचन प्रदान करते हैं। अंत में विषपान करते हुए संत्रस्त उभय पक्ष की सुरक्षा करते हैं।

मृत्यु से अनवरत लड़ते हुए अर्थात् विषपान करते-करते अजर-अमर बनने के निमित्त अमृत-प्राप्ति की मानव की कठोरतम साधना ही 'विषपान' काव्य का उद्देश्य है। 'मृत्योर्मामृतं गमय' की उपनिषद की सुप्रसिद्ध उक्ति भी इसी अनवरत साधना की प्रतीति कराती है। स्वयं कवि भी 'विषपान' काव्य के उद्देश्य का संकेत करते हुए पुस्तक की विज्ञप्ति में इस तरह कहते हैं, 'हम मृत्यु से लड़कर अमृत का वरण करें, 'विषपान' काव्य का यही साध्य है।'[११] अमर बन जाने की अदम्य उत्कंठा लिए हुए मानव सदैव मृत्यु से लड़ता, संघर्ष करता आया है। यह संघर्ष ही समुद्र मंथन है। मृत्यु ही विषपान है और जीवन-मुक्ति ही अमृत-प्राप्ति है। सद्-असद् वृत्तियों रूपी सुरासुरों से नित्य संघर्ष चलता रहता है।

उनकी जय-पराजय होती ही रहती है । सद् वृत्तियों के द्वारा असद्-वृत्तियों पर विजय प्राप्त करते हुए उसी परम तत्व(अमृत) को प्राप्त करने की जिज्ञासा ही अमृत-प्राप्ति है ।

१०- सेवाग्राम :

राष्ट्रपिता महात्मागांधी के सतहत्तर वें जन्म दिवस पर २ अक्टूबर १९४६ ई० में इंडियन प्रेस-प्रयाग से यह ग्रंथ प्रकाशित हुआ । स्पष्ट है कि यह ग्रंथ बापू को समर्पित किया गया । २३२ कलात्मक पृष्ठों में तथा ग्यारह रंगीन चित्रों से सुसज्जित इस ग्रंथ में कवि की प्राय: सभी राष्ट्रीय रचनाओं को संग्रहीत किया गया है । कुल मिलाकर इसकी सत्तानबे कविताओं में ९२ कविताएं पूर्ववर्ती चारों काव्य-संग्रहों से संकलित की गई हैं जिनमें 'भैरवी' से ३०, 'पूजागीत' से ३३, 'प्रभाती' से १७ तथा युगाधार से १२ कविताएँ संकलित हुई हैं । शेष ५ कविताएं नवीन हैं । ये भी अन्य राष्ट्रीय कविताओं की तरह राष्ट्रीय जागरण का प्रमुख स्वर लिए हुए हैं । और इनसे भी राष्ट्र के लिए बलिदानी भावना संप्रेषित होती है । 'मेरे जीते मैं देखूं, तेरे पैरों में कड़ियां', 'नवयुवकों में नव-उमंग की नई लहर लहराते चल' आदि इसके प्रमाण हैं ।

प्रस्तुत संकलन के उद्देश्य को स्पष्ट करते हुए द्विवेदी जी ग्रंथ के निवेदन में कहते हैं, 'सेवाग्राम' मेरी राष्ट्रीय रचनाओं का संकलन है । ये रचनाएं 'भैरवी', 'युगाधार', 'प्रभाती' तथा 'पूजागीत' से संग्रहीत की गई हैं । सभी राष्ट्रीय रचनाएँ एक पुस्तक में पाठकों के समक्ष आ सकें, इस प्रकाशन का यही उद्देश्य है ।'[१२]

कवि की उक्त चारों राष्ट्रीय काव्य-कृतियों का पूर्ववर्ती पृष्ठों में परिचय दिया जा चुका है । तदर्थ सेवाग्राम में संकलित उन्हीं रचनाओं का पुन: परिचय देना आवश्यक प्रतीत नहीं होता ।

११- चेतना :

सन् १९४८ ई० में सर्वप्रथम प्रकाशित चेतना का द्वितीय संस्करण १९५४ ई० में इंडियन प्रेस, प्रयाग से प्रकाशित हुआ। सड़सठ पृष्ठों में छपे इस संस्करण में तीस गीतों को संकलित किया गया है। यह कवि के राष्ट्रीय गीतों का पाँचवा काव्य-संग्रह है। इसमें स्वाधीनता पूर्व, स्वाधीनता के स्वागत से सम्बंधित तथा स्वाधीनता के अनन्तर बापू के निधन से सम्बंधित गीतों को स्थान मिला है। तात्पर्य यह कि इसमें राष्ट्र की घटनाओं से सम्बंधित त्रिविध भूमियों की झलक है। देश के कोटि-कोटि दु:खी एवं पीड़ित असहाय बंधुओं की पीड़ा को अपनी पीड़ा समझने वाले कवि की चेतना असह्य व्यथा एवं व्यग्रता से परिचालित होती हुई गीतों में बरसने लगती है। `चेतना` उसी का परिपाक है। यह उनके काव्यादर्श का प्रतिनिधित्व करनेवाला काव्य-संग्रह है।

स्वातंत्र्य पूर्व लिखित गीतों में प्राय: पराधीनकालीन राष्ट्र की पीड़ाओं का चित्रण है। इस परिवेश से सम्बद्ध गीतों में प्राय: वही पूर्ववर्ती राष्ट्रीय कृतियों की सी चेतना दृष्टिगत होती है। `अर्धनग्न`, `राष्ट्र देवता`, `उपवास`, `नीराजना` आदि युगीन समस्याओं से सम्बद्ध रचनाओं में राष्ट्र की पीड़ा के चित्र मिलते हैं। तो उनके समाधान का गांधी निर्दिष्ट मार्ग ही सर्वोत्तम मार्ग है यह कहा जाता है।

दीर्घकालीन साधना के पश्चात् सिद्धि के रूप में राष्ट्र को जो स्वतंत्रता प्राप्त होती है उससे कवि को अनहद आनंद हो जाता है और उसके स्वागतार्थ कवि सोत्साह `मंगल गीत`, `स्वतंत्रता के पुण्य पर्व पर`, `यह स्वतंत्रता की अरुण उषा`, `गीत`, `मुक्तिपर्व`, `जयकेतन`, जैसी रचनाओं का सर्जन करके अपने निर्बन्ध आनंद की अभिव्यक्ति करते हैं। उन्हें विश्वास है कि शताब्दियों के पश्चात् प्राप्त स्वाधीनता के कारण अब सब अपने मनोनीत स्वप्नों, आशा-आकांक्षाओं के अनुसार

नूतन राष्ट्र निर्माण कर पावेंगे ।

कवि आनंद की चरम सीमा के क्षितिजों का स्पर्श कर रहे थे कि अचानक राष्ट्रपिता महात्मागांधी का निधन उनको शोक-समुद्र में डूबा देता है । राष्ट्र तथा कवि के हृदय पर जैसे वज्रपात हुआ हो । कवि अपने हृदय-स्थित शोकपूर्ण अनुभूतियों को `वज्रपात`, `महा निर्वाण` जैसे काव्यों में प्रदर्शित करते हैं । किन्तु आशा और आस्था का कवि स्वयं को संभालते हुए राष्ट्र को शोक-समुद्र में से उबार कर जैसे उनमें नवीन आशा की किरणें जगाने का यत्न करते हैं । `महानिर्वाण` कविता का उद्धरण, `आज राष्ट्र के कण-कण को गांधी की मूर्ति करेंगे हम`, `उद्बोधन`, `वह बापू की आत्मा बोली`, `श्रद्धांजली` आदि रचनाएँ इसका प्रमाण हैं। अब कवि राष्ट्र के नूतन-निर्माण की आकांक्षाओं की पूर्ति के लिए आशा व्यक्त करते हुए `पंद्रह अगस्त`, `विजय पर्व`, `हर हर महादेव जय जय।`, `राष्ट्र-ध्वजा`, `दीपाली` आदि गीतों की रचना करते हैं । बापू के निधन के पश्चात् उनके जीवनादर्शों की पूर्ति और तदनुकूल नूतन राष्ट्र-निर्माण के कार्य में संलग्न हो जाने के लिए कवि समस्त राष्ट्र को संबोधित करते हैं और उपदिष्ट करते हैं कि गांधी-निर्दिष्ट मार्ग का अनुसरण करने पर ही राष्ट्र का यथोचित नव-निर्माण हो सकेगा ।

प्रस्तुत कृति के गीतों का अनुशीलन करने पर ऐसा प्रतीत होता है कि उसके प्राय: सभी गीत युगवेता महात्मागांधी को केन्द्र में रखकर उनकी गौरव गाथा गा रहे हैं । गांधी जी के प्रति कवि के भक्तिभाव की अतिशय्यता के प्रति कतिपय समालोचकों की भ्रान्त-धारणा का प्रत्याहार करते हुए स्वयं कवि `चेतना` की विज्ञप्ति में इस प्रकार कहते हैं, `आलोचकों का मत है कि मैंने अपनी रचनाओं में गांधी जी को बहुत उठा दिया है । किन्तु बात तो इसके प्रतिकूल है । सच तो यह है कि बापू ने मेरी रचनाओं को ऊपर उठा दिया है । मेरी काव्य-साधना गांधी जी को आराध्य देवता मानकर धन्य हो गई है । मैं मानता हूँ कि गांधी जी

को ही केन्द्र बिंदु मानकर विगत कई युगों से राष्ट्र की चेतना परिधि बनकर घूमती रही है ! मैं मानता हूँ मेरी रचनाओं की जो भी महत्ता है, वह उनकी ही भक्ति का प्रसाद है और उनमें जो लघुता है, वह मेरी अपनी है।"[१३]

पूर्ववर्ती पृष्ठों में यह निर्दिष्ट किया जा चुका है कि गांधी जी की उद्बुद्ध चेतना ने ही कवि की चेतना को विद्यार्थीकाल से ही प्रबुद्ध करने का प्रयास किया है जो उनके प्राय: समस्त गीतों में समय-समय पर प्रकाशित हुई है।

इस तरह 'भैरवी' से लेकर उनकी समस्त राष्ट्रीय कृतियों में गांधी जीवन-दर्शन एवं पवित्र मूल्यों की राष्ट्रीय चेतना बराबर मिलती है। यह संयोग की बात है कि 'चेतना' में इसकी मात्रा अधिक दीखती है। जैसा कि ऊपर कहा गया है, विषय-वस्तु की दृष्टि से 'चेतना' के गीत गांधी जी के घटना प्रसंगों में से अधिक संलग्न हैं। अत: 'चेतना' युगीन राष्ट्रीय चेतना की प्रतीक है, जो इसके नामाभिधान से स्पष्ट है, और इसके रचयिता कवि युग-कवि हैं।

१२-जय गान्धी :

'जय गान्धी' द्विवेदी जी कृत राष्ट्रीय गीतों का वह संकलन है जिसमें उनकी प्राय: समस्त लोकप्रिय राष्ट्रीय रचनाएँ एक ही पुस्तक में संजोयी गई हैं। सन् १९५६ ई० की गांधी जयंती के पावन अवसर पर इंडियन प्रेस-प्रयाग से यह प्रकाशित हुआ। ग्रंथ की साज-सज्जा भव्य है। इसका अन्तर्दर्शन श्री हरिभाऊ उपाध्याय जी ने किया है और श्री घनश्यामदास बिड़ला इसके संरक्षक हैं। प्रस्तुत संकलन में सूची के अनुसार ६० रचनाओं को संकलित किया गया है किन्तु क्रम नंबर ४४ पर लिखित 'पूजागीत' पृ० १८४ के अंतर्गत कुल ३१ गीत दिये हैं जिनका क्रमिक नंबर सूची में सूचित नहीं किया गया। अत: इन गीतों को मिलाया जाय तो प्रस्तुत संकलन में कुल ९० रचनाएँ हो जायेंगी। २६२ पृष्ठों के इस ग्रंथ के प्रत्येक पृष्ठ

पर विभिन्न राष्ट्रीय गतिविधियों के रेखा चित्र अंकित किये गये हैं जिससे पुस्तक की भव्यता में वृद्धि हुई है । ग्रंथ में कुल मिलाकर १७ रंगीन फोटो-प्लेट हैं जिन्हें कविता के अंतरंगी भावों का उद्घाटन करने के निमित्त रखा गया है । ग्रंथ के अलंकरण में श्री शंभुनाथ मिश्र ने पर्याप्त परिश्रम उठाया है । साथ ही अपनी कला मर्मज्ञता एवं अभिरुचि का परिचय कराया है । यह उल्लेखनीय है कि प्रस्तुत संकलन के पूर्व सन् १९४६ ई० में गांधी जी की सतहत्तरवीं वर्षगांठ पर उनकी राष्ट्रीय रचनाओं का एक संकलन `सेवाग्राम` निकल चुका था । तदर्थ यह प्रश्न उठ सकता है कि अपनी राष्ट्रीय रचनाओं के उक्त दो संकलन क्यों प्रकाशित किये होंगे । वैसे दोनों संकलनों में प्राय: कवि की समस्त लोकप्रिय राष्ट्रीय रचनाएँ संकलित हैं और इस दृष्टि से इनमें कोई विशेष अंतर नहीं है किन्तु दोनों के संकलन काल में दस वर्ष का अंतर है और सबसे उल्लेखनीय बात यह है कि प्रथम संकलन (सेवाग्राम) स्वातंत्र्य पूर्व प्रकाशित हुआ और द्वितीय (जय गांधी) स्वतंत्रता के पश्चात् । तदर्थ प्रथम संकलन में स्वतंत्रता पूर्व की कतिपय ऐसी रचनाएं हैं जो द्वितीय संकलन में नहीं ली गई और स्वतंत्रता से सम्बंधित एवं स्वतंत्रता के पश्चात् लिखी कतिपय रचनाएँ जो `चेतना` में प्रकाशित हो चुकी थीं, उनको द्वितीय संकलन में स्थान मिला है । अनावश्यक विस्तार भय से उन रचनाओं को यहाँ उद्धृत नहीं किया जा रहा है ।

कुल मिलाकर `जयगांधी` में संकलित ६० रचनाएँ ऐसी हैं जो कवि की `भैरवी`, `प्रभाती`, `पूजागीत`, `चेतना`, `युगाधार` जैसी लोकप्रिय राष्ट्रीय रचनाओं में से ही ली गई हैं । उन रचनाओं का युगीन संदर्भों में परिचय उक्त राष्ट्रीय-कृतियों के परिचय के अंतर्गत दिया जा चुका है । संकलन के प्रकाशन का उद्देश्य स्वयं कवि ने ग्रंथ के प्रारंभ में परिचय के अंतर्गत अपने हस्ताक्षरों में प्रकाशित किया है, जो इस प्रकार है :-

`जय गांधी में मैंने लोकप्रिय राष्ट्रीय रचनाओं को एक स्थान में संजोने का प्रयास किया है । राष्ट्र की मुक्ति के अहिंसात्मक अभियान में मेरा कवि एक

सच्चे सैनिक के समान सदैव आगे बढ़ा है । राष्ट्र की व्यथा से व्यथित तथा आनंद से आंदोलित हुआ है । अत: राष्ट्र की विविध गतिविधियों का चित्रांकन इन रचनाओं में मिलना स्वाभाविक है ।`[१४]

उपर्युक्त विवेचन से यहस्पष्ट होता है कि`जयगांधी` में पूर्ववर्ती कवि की राष्ट्रीय-कृतियों में से कवि ने उनकी लोकप्रिय रचनाओं को एक साथ रखने का प्रयास मात्र किया है । एक साथ पाठक को राष्ट्र की विविध गतिविधियों का समग्र चित्र प्राप्त हो यही कवि का उद्देश्य है जो उक्त उद्धरण से स्पष्ट है ।

१३-मुक्तिगंधा :

सन् १९७२ ई० में नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली से प्रकाशित द्विवेदी जी की यह कृति स्वातंत्र्योत्तर कालीन कतिपय बहुचर्चित काव्य-रचनाओं का संग्रह है । कवि ने इसे युवा पीढ़ी को समर्पित किया है । स्वाधीनता के रजत पर्व पर इसका प्रकाशन होना न केवल संयोग की ही बात है अपितु उसमें कवि का निजी दृष्टिकोण भी सन्निहित है । पचीस वर्षों में राष्ट्र किस दिशा में किन-किन आयामों की गतिविधियों से गुजरा है उसका सटीक चित्र कवि जनता एवं शासकों के सम्मुख उपस्थित करना चाहते हैं । वे स्वयं इस संग्रह के पुरोवाक् में इस तथ्य की ओर इंगित करते हुए कहते हैं,`स्वातंत्र्योत्तर काल में देश जिन आर्थिक,सामाजिक तथा राजनीतिक गतिविधियों के मोड़ से गुजरा है, जनता पर जो उसकी प्रतिक्रिया हुई है उसकी मानसिक आशा, निराशा, आकांक्षा, आक्रोश के भाव साकार होकर आपसे साक्षात्कार करना चाहते हैं ।`[१५]

११७ पृष्ठों की पुस्तक में कवि ने कुल मिलाकर ३७ गीत संकलित किये हैं जिन्हें पाँच विभिन्न शीर्षकों के अंतर्गत विभाजित किया है । ये हैं-`आवाहन`, `आत्म चिन्तन`,`जागते रहो`,`अभिवादन और`प्रभात वन्दन`।

'आवाहन' के अंतर्गत १० गीत लिये गये हैं । इनका मूल स्वर स्वाधीनता के पश्चात् राष्ट्र का नव-निर्माण करना है । स्वाधीनता के पूर्व लक्ष्य की पूर्ति के निमित्त जिस उत्साह और त्याग के साथ प्राणोत्सर्ग किया जाता था, स्वातंत्र्योत्तर काल में भी उसी उत्साह और त्यागमयी भावना के साथ राष्ट्र-निर्माण के पुनीत यज्ञ में अपनी आहुति देने के लिए कवि नवयुवकों को उत्प्रेरित करते हैं । 'युगभारती', 'पुण्य प्रयाण', 'जागरण-गीत' आदि इसके प्रमाण हैं । 'ज्वाला मंद न हो' तो नवयुवक को सावधान रहते हुए प्राणार्पण की परंपरा का पालन करने का उत्साहपूर्ण काव्य है ।

'आत्मचिन्तन' के अंतर्गत कुल मिलाकर सात गीत संकलित किये गये हैं । इनका मूल स्वर स्वाधीन भारत के शासकों को आत्म चिन्तन करने को उपदिष्ट करना है । राष्ट्र की राजनीतिक, आर्थिक तथा सामाजिक स्थितियों का सटीक चित्र उभारते हुए शासक का ध्यान निजी उत्तरदायित्व की ओर आकर्षित किया गया है । जनता का प्रतिनिधित्व एवं प्रवक्ता बनते हुए कवि ने शासक को कथनी नहीं, करनी की आवश्यकता है कहकर उसे आत्म चिन्तन के लिए विवश किया है । इस संदर्भ में कवि की बहुचर्चित दो प्रसिद्ध रचनाएँ 'ऐ लाल किले पर फण्डे-फहरानेवालो' तथा 'मुझे भरोसा रहा नहीं अब दिल्ली के दरबार का' उक्त शीर्षक के अंतर्गत रखी गई हैं ।

'जागते रहो' के अंतर्गत कवि ने ६ गीत संकलित किये हैं । इनका प्रमुख स्वर अमर शहीदों के तप और त्याग तथा आत्मोत्सर्ग से प्राप्त बहुमूल्य स्वाधीनता की सुरक्षा करना है । तदर्थ कवि वीर सैनिकों को सीमान्त के वीर पहरुए बनकर अनवरत सावधानी के साथ किसी भी आक्रान्ता को ध्वस्त करने के लिए उपदिष्ट करते हैं । अर्थात् चीनी आक्रमण के समय 'युद्ध न होगा बन्द, युद्ध ही जब उसका पैगाम है' कहकर वीर सैनिकों को कर्तव्य-भान कराते हैं । दूसरी ओर 'नई फसलें

नामक रचना में राष्ट्र की अभिवृद्धि में अमूल्य योगदान प्रदान करनेवाले कृषकों को कर्तव्य-भान कराते हैं। इस तरह राष्ट्र निर्माण एवं राष्ट्र सुरक्षा जैसे महत्वपूर्ण पक्षों पर कवि सीधा प्रकाश डालते हैं।

`अभिनंदन` में दस गीतों को स्थान मिला है। बापू, विनोबा, अशोक, शिवाजी, शास्त्री जी, सीमान्त गांधी, राजेन्द्रप्रसाद, निराला प्रभृति राजनीतिक एवं साहित्यिक मनीषियों की प्रशस्ति के द्वारा कवि उनके योगदान तथा भारत में पुन: अवतरण की ओर संकेत करते हैं।

`अक्षत चन्दन` में कवि ने केवल चार गीत संकलित किये हैं। एक ओर `रजतपर्व` तथा `अक्षत चन्दन` जैसे दो गीतों में क्रमश: भारत के रजत जयन्ती के प्रसंग तथा बांग्ला देश की स्वाधीनता के पुनीत पर्व पर प्राप्त आनंद के उद्रेक का वर्णन करते हैं, तो दूसरी ओर शेष दो गीतों में इससे भिन्न और विरोधी चित्र प्रस्तुत करते हैं। `युगबोध अभिशप्त` में राष्ट्र की दुर्दशायुक्त स्थितियों का यथार्थ के धरातल पर चित्रण है। `यह कैसा है जनतंत्र` में जनमानस की वास्तविक मन:स्थिति का उद्घाटन है। मानव हृदयों में स्थित सन्त्रास, घुटन और पीड़ा का उल्लेख करके कवि शासकों को अपनी रीति-नीति को बदल देने के लिए उपदिष्ट करते हैं। साथ ही ललकारते हुए उन्हें यह भी कह देते हैं कि जनता की पीड़ा और घुटन एक दिन जन-क्रांति लाकर भारत का इतिहास बदल देगी।

निष्कर्ष यह कि इन रचनाओं के द्वारा क्या शासक क्या जनता सभी को राष्ट्र के नव-निर्माण एवं उसकी सुरक्षा के हित अपने कर्तव्य का भान दिलाते हुए पूर्ण सहयोग देने की प्रेरणा देते हैं। यह एक ऐसी राष्ट्रीय कृति है जो पचीस वर्षों के अंतर्गत राष्ट्र की विविध गतिविधियों का लेखा-जोखा प्रस्तुत करनेवाला दस्तावेज बन गई है। राष्ट्रीय उत्कर्ष के लिए निरंतर चिन्तित कवि के मन का साकार रूप प्रस्तुत कृति में अभिव्यंजित हुआ है।

बाल- साहित्य

१- शिशु भारती :

सन् १९४९ ई० में इंडियन प्रेस-प्रयाग से प्रकाशित `शिशुभारती` द्विवेदी जी की बाल-कविताओं की एक संकलित कृति है । ५० पृष्ठों में छपी इस पुस्तक में ३२ छोटी रचनाएँ हैं । इनका अध्ययन करने पर उन्हें चार विभागों में विभक्त किया जा सकता है । ये हैं - (१) नीति-विषयक(२) राष्ट्रीय(३) प्रकृति परक और (४) जिज्ञासा परक ।

उनके नीति विषयक गीतों में सामान्यत: स्व-सुधार की प्रवृत्ति अधिक दीखती है । कभी प्रभु से प्रार्थना करते हुए अपने अज्ञान तिमिर को दूर कर ज्ञान का प्रकाश फैलाने की कामना की जाती है तो कभी जीवन में चरित्र विषयक कतिपय अच्छे गुणों की प्राप्ति के संदर्भ में कहा जाता है । `प्रार्थना`, `मीठे बोल`, `उठो उठो`, `आगे आओ`, `जब बोलो तब हंसकर बोलो`, `एक-एक` आदि गीत इसके प्रमाण हैं ।

कुछ रचनाएँ ऐसी भी हैं जिनमें राष्ट्रीयता का भाव भरा है । समस्त राष्ट्र में अपनी कृतियों के द्वारा राष्ट्रीय जागरण का शंखनाद करनेवाले कवि, बाल-मानस में भी राष्ट्रीयता का वीरोत्तेजक भावोद्रेक करने का यत्न करते हैं। बालकों को ~~त्रक्किस्स~~ उपदिष्ट करते हुए वे कहते हैं कि उन्हें निर्धारित लक्ष्य (राष्ट्र-नव-निर्माण) की प्राप्ति के हेतु अमिट लकीर बनते हुए मर मिटने का यत्न करना चाहिए । साथ ही दीन-दुखियों की, अंधों-लंगड़ों की सेवा करते हुए राष्ट्र के उत्कर्षमें सहयोग देना चाहिए । `तुम वीर बनो`, `बालवीर`, `विजयमुकुट` आदि प्रमाण के रूप में प्रस्तुत किये जा सकते हैं। `मैं क्या चाहता हूँ ?` में तो और कुछ न बनकर देश का सिपाही बनूँगा कहकर राष्ट्र की सुरक्षा के दायित्व का निर्वहण करने का भाव भी व्यंजित किया गया है ।

प्रकृति परक गीत अपेक्षा कृत संख्या में अधिक हैं । इन सबका नाम परिगणन करना अनावश्यक विस्तार होगा । इन गीतों में प्रकृति के असीम और निर्दोष आनंद की अनुभूति कवि बाल-पाठकों के सम्मुख उनकी ही भाषा में अभिव्यक्त करते हैं । कभी बसंत आदि ऋतुओं पर तो कभी वर्षा और बादलों पर कवि आश्चर्य युक्त सुखद अनुभूति को व्यक्त करते दिखाई देते हैं ।

जिज्ञासापरक केवल दो ही गीत हैं । 'कौन' और- 'नटखट पांडे' । 'कौन' में बूढे की विनाशक प्रवृत्ति का नाम बताये बिना केवल प्रवृत्तियों के ही बिंब उभारकर सामने रखा जाता है । गीत के अंत में उसका नामोल्लेख किया गया है । 'नटखट पांडे' में बालक की आये दिन कोई न कोई शरारत करने की साहजिक वृत्ति को निर्दिष्ट किया गया है । इस तरह बालक की जिज्ञासा वृत्ति को पुष्ट करने का प्रयास किया गया है ।

गीतों के भावों को सुस्पष्ट करने के उद्देश्य से प्राय: प्रत्येक गीत के साथ यथोचित चित्र भी अंकित किया गया है । सजिल्द पुस्तक के मुखपृष्ठ पर सूर्योदय के साथ-साथ बालक को तुरही बजाते हुए अंकित किया गया है जो संभवत: स्वातंत्र्योत्तर कालीन नूतन प्रभात का सूचक है ।

२-बालभारती :

स्वतंत्र भारत के बालक-बालिकाओं के लिए लिखित एक कवि की लघु कविताओं का संग्रह है । अठावन पृष्ठों में छपी इस पुस्तक में २१ छोटी-छोटी बाल कविताएं हैं जो सन् १९५३ ई० की २६ जनवरी के प्रजासत्ताक दिन पर इंडियन प्रेस, प्रयाग द्वारा प्रकाशित हुईं । यह केन्द्रीय और उत्तरप्रदेश शासन द्वारा पुरस्कृत रचना है ।

बच्चों के लिए कविताएँ लिखने में कवि को संकोच या हीनभाव की अनुभूति

नहीं होती जैसा कि कतिपय कवि मानते हैं । वरन् एक प्रकार का आत्मीय सुख व आनंद प्राप्त होता है । इसकी प्रतीति कराते हुए कवि प्रस्तुत पुस्तक के प्रारंभ में ही कहते हैं, 'ये कविताएँ मैंने तुम्हारे ही लिए लिखी हैं, इन्हें पढ़कर तुम्हें आनंद मिला, तो मैं समझूँगा कि ये अच्छी हैं । मुझे तुम्हारे लिए कविताएँ लिखने में बड़ा सुख मिलता है, और तुम्हें मेरी कविताएँ पढ़ने में भी । हमारी तुम्हारी यह मैत्री अमर रहे, यही प्रभु से प्रार्थना करता हूँ ।' १६

प्रस्तुत पुस्तक में प्रमुख रूप से राष्ट्रीय एवं नीति विषयक रचनाएँ मिलती हैं । राष्ट्रीय रचनाओं में 'हमारा नेता' ,'वीर जवाहर', 'नई लगन से काम करो', 'यह स्वतंत्रता का पहला दिन', 'राष्ट्र गीत' 'अचल प्रण' ,'प्रयाणगीत', 'तरल-तिरंगा' , प्रभृति गीत हैं जिनका मूल स्वर है सोत्साह कर्तव्य-परायण रहते हुए राष्ट्र के प्रति ममत्व उत्पन्न करना । बाल-मानस में राष्ट्रीयता का भाव भरने का अच्छा प्रयास है ।

कवि दृढ़तापूर्वक मानते हैं कि बालक ही देश का सच्चा धन है और राष्ट्र का भावी कर्णधार है । तदर्थ उसमें प्रारंभ से ही चरित्र-निर्माण किया जाय तो बड़ा होने पर वही राष्ट्र का भाग्य-विधाता बन सकता है । तदर्थ कवि शेष गीतों में ऐसा संदेश संगुंफित करने का यत्न करते हैं जिससे अनायास बाल-चरित्र का निर्माण हो जाय । 'सोने का कंगन', 'प्यारे प्यारे तारे चमको', 'ध्रुवतारा' आदि गीत इसके प्रमाण हैं ।

पुस्तक के सभी गीतों के प्रमुख स्वर को ध्यान में रखते हुए यथोचित रंगीन चित्र भी अंकित किये गये हैं । तदर्थ गीतों का भाव स्वतः स्पष्ट हो जाता है । साथ ही पुस्तक की शोभा बढ़ जाती है ।

सारांशतः यह कहा जा सकता है कि 'शिशुभारती' की तरह 'बालभारती'

की-तरह--ब भी चरित्र-निर्माण और राष्ट्रीयता का भाव-प्राधान्य लिए हुए हैं।

३-दूध बताशा :

`दूध बताशा` द्विवेदी जी का एक ऐसा काव्य-संग्रह है जिसके गीतों को पढ़कर नन्हें-नन्हें बालकों का दिल और दिमाग प्रफुल्लित हो जाय, अनायास ही काव्य-पठन की रुचि उत्पन्न हो जाय। कवि स्वयं इस तथ्य की ओर संकेत करते हुए कहते हैं, ` कविताएँ ऐसी हैं जिनसे बच्चों का दिल खुश हो, और कविता पढ़ने में उन्हें रस मिले। ----- दूध बतासा पाकर मेरे नन्हें दोस्त बहुत प्रसन्न होंगे, इतना मैं जानता हूँ।`[१७]

सन् १९५४ ई० में इसे इंडियन प्रेस, प्रयाग ने प्रकाशित किया। चौंसठ पृष्ठों में छपी इस पुस्तक में कुल मिलाकर ३१ गीत हैं। इसे भी केन्द्रीय एवं उत्तरप्रदेश शासन की ओर से पुरस्कृत किया गया। बाल-रुचि को उत्तेजित एवं परिपुष्ट करने के उद्देश्य से विभिन्न भाववाही रंगीन चित्रों को अंकित करके पुस्तक की शोभा अतीव बढ़ा दी गई है। इन चित्रों में गीतों के भावों को साकार करने का प्रयास है। मानस-शास्त्रीय सिद्धान्त है कि बालक श्राव्यकी अपेक्षा दृश्य उपकरणों के माध्यम से बड़ी सरलता से रुचि एवं उमंग के साथ कथ्य को संग्रहीत करता है, कवि ने भलीभांति समझा है। तभी तो यद्यपि अपने गीतों को वे सरलतम शब्दावली में अभिव्यक्त करने का यत्न करते हैं, तथापि प्राय: प्रत्येक बाल-कविता में दर्शनीय चित्रों को विविध रंगों में प्रस्तुत करने का अनिवार्य रूप से प्रयास करते हैं।

इन गीतों का प्रमुख स्वर राष्ट्रीय एवं चरित्र-निर्माण का है। अतीत भारत का गौरवपूर्ण गुणकथन करते हुए बाल-मानस में माँ भारती के प्रति प्रेरणामयी अनुरक्ति का भाव भरने का सोद्देश्य प्रयत्न उनके राष्ट्रीय गीतों में विद्यमान है।

`भारत` ,`कर्मवीर`,`माई के लाल`,`चलो-चलो` , अगर बड़े तुम बनना चाहो`, `चर्खा प्यारा`,`गंगा माता` प्रभृति गीत इसके प्रमाण हैं । शेष गीत प्रकृति के विभिन्न पदार्थों व पशु-पक्षियों का गुण कथन करते हुए बालकों को चरित्र-निर्माण के संदर्भ में कोई न कोई संदेश प्रदान करने का सुनिश्चित यत्न करते हैं। `कोयल`,`फूल और कांटे`,`मकड़ी`,`कबूतर`,`तारे` आदि इसके उदाहरण हैं ।

गीतों की शैली बड़ी स्नेक रोचक और सबीवता लिए हुए है । शब्दों का चयन भावानुकूल तथा लय और गति को गति प्रदान करनेवाला है । निष्कर्ष यह कि प्रस्तुत कृति में बड़ी रोचकता के साथ भारतीय उज्ज्वल अतीत का चित्रांकन कर एक ओर बाल-मानस में राष्ट्र के प्रति ममत्व भाव भरा गया है तो दूसरी ओर विभिन्न पशु-पक्षियों व पदार्थों के गुणकथन द्वारा चरित्र निर्माण का सफल प्रयत्न किया गया है ।

४- बाँसुरी :

`बाँसुरी` भी द्विवेदी जी की कतिपय बाल-कविताओं का संकलित ग्रंथ है जो `शिशुभारती` की अपेक्षा आकार-प्रकार में बड़ा है । इसमें कुल १०२ पृष्ठ हैं और ४८ गीतों को इसमें संकलित किया गया है । इंडियन प्रेस- इलाहाबाद से इसे सन् १९५७ ई० में प्रकाशित किया गया है ।

शिशु भारती की तरह इस ग्रंथ में भी प्रकृति, नीति, राष्ट्र व जिज्ञासापरक चार भिन्न विषयों पर लिखे गीत मिलते हैं । इसमें भी प्रकृति परक गीतों की संख्या अन्य विषयों की अपेक्षा अधिक है । प्रकृति का वर्णन करते समय यहाँ भी वही निर्दोष आनंद और शीतलता का कवि ने परिचय कराया है । प्रस्तुत पुस्तक में कुल पाँच रंगीन फोटो-प्लेट्स हैं जिनमें से तीन प्रकृति का परिचय करानेवाली हैं । एक भारत की अतीतकालीन गौरव गरिमा को द्योतित करनेवाली

और एक राष्ट्रीय भाव को उत्तेजित करनेवाली प्लेट है ।

`हिमालय`, `मुस्कानों से भर दो घर-वन`, `कलम की आत्मकहानी`, `प्रकृति-संदेश`, आदि गीत नीति-प्रधान गीत हैं । इनका प्रमुख स्वर है - तुम अगर चाहो तो पर्वत की-सी ऊंचाई, सागर की-सी गहराई, लहरों की-सी उमंगें, नभ जैसा विस्तार और पृथ्वी जैसा धैर्य प्राप्त कर सकते हो । शर्त केवल इतनी ही है कि किसी भी परिस्थिति में कभी हिम्मत हारे बिना तुम अपना कार्य बड़ी उमंग के साथ करते जाओ । कोई साथी-संगी तुम्हारे साथ न हो तो भी एक अकेले आगे बढ़ते ही जाओ जब तक तुम लक्ष्य-सिद्धि प्राप्त न कर लो ।

राष्ट्रीय भावों को भर देनेवाले प्राय: १५ गीत प्रस्तुत ग्रंथ में संकलित हैं । `मातृभूमि`, `जय जय स्वदेश`, `भारत वर्ष`, `गिरिराज`, `अतीत गौरव`, रणजीत-सिंह`, `प्रयाण गीत` , `तुम भारत के इतिहास बनो` इत्यादि गीत राष्ट्रीय भावधारा के गीत हैं । कवि इन गीतों के द्वारा कभी अतीत भारत के गौरव का गान करते हैं तो कभी बालकों के मस्तिष्क में साहस और उमंग भरने का प्रयास करते हैं । जिस देश में राम-कृष्ण, बुद्ध, अशोक, शिवा-प्रताप जैसे वीर महापुरुष हो गये हैं, हम उन्हीं की संतानें हैं और उन्हीं की तरह हमें भी माँ के भाल को चमकाना है । माँ की नित्यप्रति, आवश्यकता पडने पर अपने प्राणों की बाजी लगाते हुए सुरक्षा करनी है ।

`सपने में` तथा `तुम क्या करते हम क्या करते` ये दो गीत जिज्ञासापूर्ति के गीत हैं । सारी असंभव बातें संभव हो जायं तो तुम क्या करते हम क्या करते ?` कहकर बालक की जिज्ञासा को उत्तेजित किया गया है । गीतों में भाषा की सरलता, सरसता और शैली की प्रवाहमयता अधिक पायी जाती है ।सजिल्द पुस्तक मे के मुखपृष्ठ पर प्राकृतिक च चित्र के साथ बाँसुरी बजाते हुए एक किशोर

का रंगीन चित्र अंकित किया गया है । सारांश यह कि `बाँसुरी` भी पूर्वोक्त बाल-कृतियों का ही स्वर फूंकती है अर्थात् बाल मानस में चरित्र प्रधान उन नेताओं का चित्र उपस्थित कियागया है जिन्होंने राष्ट्र के उत्कर्ष के लिए बड़ी प्रबुद्धता के साथ समर्पण किया । बालक को ऐसा ही करने की प्रेरणा दी गई है ।

५- हंसो-हंसाओ :

`हंसो हंसाओ` यथा नामा तथा गुणा: की उक्ति को सार्थक करनेवाली कविताओं की संकलित कृति है । इसमें बच्चों को हंसी खेल से खुश करनेवाली मजेदार कविताएँ संकलित की गई हैं । द्विवेदी जी की इन कविताओं को सन् १९६० ई० में इंडियन प्रेस-प्रयाग ने प्रकाशित किया । ३२ पृष्ठों की इस छोटी सी पुस्तिका में मात्र १८ कविताएँ संकलित हुई हैं ।

प्रस्तुत पुस्तक की विशेषता यह है कि पुस्तक में आद्यंत प्रत्येक पृष्ठ पर लाल रंग की स्याही से संपूर्ण पृष्ठ में समाविष्ट हो उतना बड़ा चित्र रेखांकित किया गया है । प्रत्येक छोटी कविता के भाव को सशक्त रेखा- चित्र के द्वारा साकार करने का सफल प्रयास किया गया है । चित्रकार श्री बी के डी एतदर्थ धन्यवाद के पात्र हैं । पुस्तक छोटी होते हुए भी रेखा चित्रों के आकर्षण के कारण एक बार हाथ में उठाने के बाद बालक उसे संपूर्ण पढ़े बिना छोड़ने का यत्न नहीं करेगा । चित्रों ने कविता में जैसे जान डाल दी है । चित्रकार भी कविता के भाव के साथ भावित होकर चित्रांकन करता दृष्टिगत होता है ।

प्रस्तुत पुस्तिका के अंतर्गत रखी गई कविताएँ हंसते-हंसाते हुए संदेश प्रदान कर जाती हैं । यथा-`नटखट पाण्डे`,`ईंटों की रेल`,`मीठे बोल`,`चल रे मटके टम्मक टूं`,`बाल-विनय` आदि कविताएँ इसका प्रमाण हैं । इनके अतिरिक्त अन्य कविताएँ भी बालक को सामान्य ज्ञान प्रदान करती हैं । हंसते-हंसते कविता-प्रेम

बढाने का तथा इप्सित ज्ञान व संदेश प्रदान करने का कवि का प्रयास वस्तुत: बहुत अच्छा बन पाया है ।

सारांश यह कि यह पुस्तिका उपर्युक्त बाल-कृतियों के विषय वस्तु की दृष्टि से भिन्न है । इसमें राष्ट्रीयतावादी संदेश नहीं है । यहाँ कवि चिन्तन के बोझ से मुक्त होकर बाल-विनोदपूर्ण मन:स्थिति से काव्य रचना करता दृष्टिगत होता है ।

६-नेहरू चाचा :

`नेहरू चाचा` द्विवेदी जी की एक विशेष दृष्टिकोण से लिखी गई स्वतंत्र भारत के सर्वप्रथम भूतपूर्व प्रधानमंत्री स्व० वीर जवाहरलाल की संक्षिप्त जीवनी को बालकों के सम्मुख रखने के प्रयास की काव्यमय पुस्तिका है । नेहरू जी के बचपन से लेकर प्रधानमंत्री तक की जीवनी के विभिन्न छोटे-छोटे घटना प्रसंगों को साकार रूप में प्रदर्शित करने का इस पुस्तक में प्रयास किया गया है । २८ पृष्ठों वाली इस पुस्तिका को सन् १९६३ ई० में इंडियन प्रेस-प्रयाग द्वारा प्रकाशित किया गया । पुस्तक के प्रत्येकदायें पृष्ठ पर तत् तत् घटना-प्रसंग के भावों को रंगीन चित्रों के द्वारा चित्रित करने का सफल यत्न किया गया है ।

इस पुस्तक में कवि का उद्देश्य जवाहरलाल जी की केवल जीवनी प्रस्तुत करना ही नहीं रहा किन्तु उस जीवनी के द्वारा बालकों में यह प्रेरणा संप्रेषित करने का उद्देश्य रहा है कि संपन्न परिवार में उत्पन्न होने पर भी तथा अंग्रेजी विद्याध्ययन करने पर भी संस्कारी बालक जवह ब जवाहर किस तरह माँ भारती के दुख व दारिद्र्य से दु:खी होकर समस्त सम्पन्नता व विदेशीपन का परित्याग कर देता है और केवल माँ को स्वाधीन बनाने और उसकी उत्कर्ष-सिद्धि के लिए कैसे स्वदेशी चीज-वस्तुओं का बड़े उत्साहपूर्वक स्वीकार करता है ।

७-दस-कहानियाँ :

जैसा कि शीर्षक से ही स्पष्ट है, मुस प्रस्तुत पुस्तक में विभिन्न विषयों

पर लिखी पद्यमय दस कहानियाँ संकलित की गई हैं । हमारे देश में मूलत: संस्कृत में लिखी पंचतंत्र की कहानियाँ अत्यधिक प्रसिद्ध हैं । एक सुनिश्चित नीति-विषयक बोध प्रदान करनेवाली एवं बाल-मानस को रुचिकर ये कहानियाँ गद्य एवं पद्य के द्वारा विभिन्न भाषा एवं बोलियों में प्रसिद्ध हो चुकी हैं । आधुनिक हिन्दी भाषा में भी प्रसिद्ध इन कहानियों को बाल-साहित्य के लिए बड़े चाव से स्वीकार किया गया है । कविवर पं० सोहनलाल द्विवेदी ने भी उन कहानियों में से दस कहानियाँ पसंद कर उन्हें पद्यमय रूप प्रदान करते हुए प्रस्तुत पुस्तक में संग्रहित किया है ।

आजीवन नीतिपूर्ण जीवन जीनेवाले कवि बालकों में भी नैतिक जीवन के प्रति अभिरुचि उत्पन्न करने के सदुद्देश्य से प्रेरित होकर बाल-साहित्य का सर्जन करने की प्रक्रिया में रत हैं । बालकों को स्वभावत: प्रकृति एवं पशु- पक्षियों के प्रति आकर्षण रहता है । कहानियों के चयन में कवि के दो दृष्टिकोण स्पष्ट-रूपेण परिलक्षित होते हैं । जो इस प्रकार हैं । प्रारंभिक तीन कहानियों में खरगोश तथा बन्दर जैसे पशुओं की कुशाग्र बुद्धि का परिचय दिया गया है । आपत्काल में ये पशु किस तरह अपनी बुद्धि का समयोचित उपयोग करके अपने प्राण बचाने की चेष्टा करते हैं यह इन कहानियों में भलीभांति निर्दिष्ट किया गया है । शेष सातों कहानियों में 'जैसी करनी वैसी भरनी', 'जगत में घर की फूट बुरी' आदि नीति-विषयक सिद्धान्त कथनों को चरितार्थ होते हुए दिखाया गया है । 'बैरगिया नाला', 'मेढक और साँप' ऐसी कहानियाँ हैं ।

मूर्ख और बुद्धिहीन प्रशासक के कारण प्रजाजनों को कितना कष्ट उठाना पड़ता है, 'अन्धेर नगरी' इसका प्रमाण है । दोस्त का चयन सोच-समझकर किया जाना चाहिए वरन् वही दोस्त कभी जान का ग्राहक भी बन सकता है, 'नादान दोस्त' कहानी का मध्यवर्ती विचार यही है । शेर का चर्म पहनकर गधा, जो

मूर्ख प्राणी है, कभी शेर बन सकता है ? शेर बनने के लिए पात्रता चाहिए । साथ ही बुद्धि रहित नकल का बुरा परिणाम भोगना ही पड़ता है यह नीतियुक्त विधान 'नकली शेर' कहानी में चरितार्थ होते हुए दिखाया गया है । विद्योपार्जन करके पंडित बन जाने पर भी ज्ञान का यथोचित उपयोग करने की विवेक बुद्धि यदि मानव में न हो तो उसका कितना भयंकर परिणाम भोगना पड़ता है यह 'मूर्ख पंडित' कहानी के द्वारा सिद्ध किया गया है । आलस्य पूर्ण नैष्कर्म्य की स्थिति अपनाते हुए केवल कपोल-कल्पनाएँ करते रहने की मन:प्रवृत्ति हितावह नहीं है । 'सत्तुराम लपट्टूराम' कहानी में इसे भलीभाँति व्यक्त किया गया है ।

सारांशत: उक्त दशों कहानियों में से पाठक को उचित बोध मिल जाता है और स्वभावत: उसकी चित्तवृत्ति नीतिपूर्ण जीवन जीने की ओर आकृष्ट हो जाती है । पद्यमय कहानियों को सरलतम शब्दावली में प्रस्तुत किया गया है । प्रसाद व मधुर गुणों के अतिरिक्त इनमें उत्सुकता एवं सरसता के गुण भी विद्यमान हैं । बालक की रुचि का आद्यंत ध्यान रखा गया है । अंतत: यह कहना उचित ही होगा कि इन कहानियों को ऐसे ढंग से प्रस्तुत किया गया है कि ये बाल-मानस पर इप्सित प्रभाव छोड़ जाती हैं जिससे बालक के चरित्र-गठन में बहुत बड़ी सहायता पहुंचती है । चरित्र-गठन राष्ट्रीयता के भावोद्दीपन के लिए परम पोषक माना गया है । चरित्र-हीन राष्ट्र अपने विनाश को शीघ्र ही निमंत्रित करता है । अत: प्रस्तुत कृति राष्ट्रीयता से प्रत्यक्ष संबंध न रखते हुए भी परोक्ष सम्बंध अवश्य रखती है ।

८- बच्चों के बापू :

गांधी जन्म शताब्दी के सुपावन अवसर पर अर्थात् २ अक्टूबर १९६९ ई० में इंडियन प्रेस-प्रयाग द्वारा प्रकाशित यह पुस्तक सर्वोत्कृष्ट सचित्र बाल-उपहार है । बापू तो नहीं रहे किन्तु उनके जीवन की ज्योति सदैव जगमगाती रहे और नयी पीढ़ी के बच्चों को बापू का सीधा, सादा, सरल जीवन होते हुए भी कितना

उदात्त, भव्य एवं दिव्य जीवन था यह दिखाने का कवि का प्रयास है ।

बापू की जीवनी के छोटे-मोटे ३८ प्रसंगों को कवि ने काव्यमय रूप प्रदान करते हुए इसमें संकलित किया है । स्वयं कवि के कथनानुसार बापू के जीते जी इस कविता-प्रसंग का सर्जन हो चुका था और बापू ने स्वयं इसे सुना था । सुनकर उन्होंने अट्टहास्य किया था ।[६८]

कविता का मूल स्वर स्पष्ट करते हुए कवि स्वयं लिखते हैं, 'बापू को एक बच्चा कैसे चाहता है, उसके मन में क्या-क्या उमंगें उठती हैं, इस कविता में यही दिखाया गया है ।'[६९] बापू के जीवन में निहित स्वाश्रय प्रियता, सादगी, सरलता, मानव-प्रेम तथा बाल-वात्सल्य जैसे दिव्य गुणों की झांकी उनके कतिपय जीवन प्रसंगों के द्वारा कराने का प्रयास यहाँ कवि ने किया है ।

पुस्तक के प्रत्येक दायें-बायें पृष्ठ पर सुंदर विविध रंगी चित्र अंकित किये गये हैं और साथ ही बापू के प्रसंगों को लघुत्तम शब्दों में, काव्य मय रूप में संग्रथित करने का यत्न किया गया है । शब्द और चित्र दोनों मिलकर ऐसा तो प्रभाव उत्पन्न करते हैं कि लगता है गांधी जी कुछ समय के लिए पुन: जीवित हो गये ।

कुल मिलाकर यह पुस्तक बाल-मानस पर अमिट प्रभाव छोड़ जाती है । बालक में स्वत: अंतप्रेरणा जगती है कि वह भी बापू जैसा महान् बने और राष्ट्र की सेवा करके राष्ट्र का सर ऊँचा उठाये ।

पुस्तक के सदुद्देश्य एवं प्रभावोत्पादकता को भलीभाँति समझकर उत्तरप्रदेश की तत्युगीन सरकार ने उसे सम्मानित करते हुए पुरस्कृत किया था । इतना ही नहीं माननीय श्री कमलापति त्रिपाठी जी ने उत्तर प्रदेश के मुख्य मंत्री की हैसियत से अपनी सम्मति देते हुए कहा था, 'बच्चों के बापू' का दर्शन मिला । आद्यंत देखकर

अत्यंत प्रसन्नता हुई । मैं इसे शिक्षा विभाग को इस संस्तुति के साथ भेज रहा हूँ कि बेसिक स्कूल के प्रत्येक पुस्तकालय के लिए यह अनिवार्य रूप से ले ली जाय ।[20] अन्य सम्मतियाँ भी हैं किन्तु विस्तार भय से उन्हें यहाँ उद्धृत नहीं किया जायगा। यथासमय उन्हें भी उद्धृत किया जाएगा ।

सारांश यह कि बापू के जीवन प्रसंगों से प्रभावित बच्चे उनकी महत्ता का अनुभव करते हैं । साथ ही उनके मन में यह जिज्ञासा बनी रहती है कि बापू इतने महान् कैसे बन पाये ? समय की पाबन्दी, नित्य कार्यरत रहने की आदत एवं सबके प्रति प्रेम एवं अक्रोध(क्रोध रहित) होकर शांत भाव से मधुर संभाषण करने की असाधारण आदत के कारण बच्चों में उनके प्रति श्रद्धा व आदर का भाव उत्पन्न हो जाता है । प्रस्तुत कृति भी 'नेहरू चाचा' की तरह बालमानस में राष्ट्रीयता की प्रेरणा प्रदान करती है ।

९-'शिशुगीत'

'शिशुगीत' कविवर सोहनलाल द्विवेदी की बाल-कविताओं का ऐसा संकलन है जिसमें कुल मिलाकर छोटी-छोटी २३ कविताएं ली गई हैं । २४ पृष्ठों की छोटी-सी पुस्तिका जुलाई १९७१ ई० में प्रथम बार भारत सरकार के सूचना और प्रसारण मंत्रालय के प्रकाशन विभाग की ओर से प्रकाशित की गई । इसका द्वितीय संस्करण फरवरी १९७८ ई० में पुन: 'प्रकाशन विभाग' से ही निकाला गया । आर्ट पेपर(सिल्क पेपर) पर छपी इस पुस्तिका में प्रत्येक पृष्ठ पर विविध रंगी चित्र अंकित किये गये हैं । कविता के भाव को उभारकर साकार करनेवाले इन चित्रों में पूर्ववर्ती कृतियों की तरह चित्ताकर्षक प्रभावक्षमता है । अनाम कलाकार एतदर्थ धन्यवाद के भागी हैं ।

'शिशुगीत' में संकलित प्राय: सभी गीत अपनी जगह पर उत्तम हैं । किन्तु एक बात जो विशेष रूप से अखरने वाली है, वह यह कि इस संकलन के २३गीतों

में से लगभग आधे से अधिक गीतों की पुनरावृत्ति हुई है । अर्थात् इसमें ऐसे कई गीत हैं जो पूर्ववर्ती अन्य बाल-कविताओं की पुस्तकों में प्रकाशित हो चुके हैं । यदि कुछ अप्रकाशित नये गीतों को इसमें स्थान मिला होता तो यह पुस्तिका विशेष आकर्षण का केन्द्र बन जाती ।

संकलित नये गीतों में `उठो सबेरे`, `मेरी गुडिया `, `परियों का देश`, `कुट्टी`, `बारहमास`, `कागज की नैया` , `सड़क`, `ओ हो सर्दी` आदि हैं । इन गीतों का प्रमुख स्वर बालक की कतिपय जन्मजात सद्वृत्तियों को उभारना ही है । उषा से लेकर संध्या तक के प्राय: सभी काम हंसते हुए करने चाहिए क्योंकि हंसी, आनन्द प्राप्ति की कुंजी है । `उठो सबेरे ` नामक प्रथम गीत में इसे भली-भाँति देखा जा सकता है । `प्रार्थना` में अपनी सीमित कल्पनाओं के आयामों में रहकर भी बालक कितने निर्दोष एवं निष्कपट भाव से भगवान को अपने घर निमंत्रित करता है और खेलने व खाने की वस्तुएँ देने का वादा करता है ।

बालक में अपनी चीज-वस्तु के प्रति अपनत्व का भाव प्रबल होता है । इस वृत्ति का सही उपयोग करते हुए `गुडिया` के प्रति निर्दोष और ममतापूर्ण प्यार बताया गया है । श्रेष्ठत्व को सिद्ध करते हुए `मेरी गुडिया कभी गाली नहीं बोलती` कहकर अच्छा बालक कैसा होना चाहिए उसके प्रति भी संकेत किया गया है ।

बालक की सीमारहित जिज्ञासा वृत्ति को भी संतुष्ट करने के उद्देश्य से `परियों का देश` `तितली रानी`, `कागज की नैया` आदि गीतों को इस संकलन में स्थान मिला है ।

सारांशत: यह संकलन नन्हें-मुन्नों की खुशी के लिए एक अच्छा सचित्र उपहार है । मोटे तौर से यह कहा जा सकता है कि इसका मूल स्वर चरित्र-निर्माण का ही है ।

१०- हम बाल वीर :

बालकों में श्रेष्ठ विचार और देश-भक्ति के भाव भरनेवाली सरल व सरस कविताओं का संग्रह `हम बाल वीर` है । २४ पृष्ठों की इस छोटी-सी पुस्तिका में कुल १७ गीत संगृहित किये गये हैं । सन् १९७६ ई० में राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली से इसे प्रथम बार प्रकाशित किया गया । यह भी सचित्र पुस्तक है ।

उक्त सत्रह गीतों में प्रायः वे ही गीत संकलित किये गये हैं जो मूलतः वीरोत्तेजक भाव से विभूषित हैं और द्विवेदी जी की पूर्ववर्ती `बांसुरी`, `शिशु-भारती`, `शिशुगीत` आदि पुस्तकों में प्रकाशित हो चुके हैं । तत् तत् गीतों के संदर्भ में ~~प्रकाशित-इने~~ आवश्यकतानुसार उन-उन पुस्तकों का परिचय कराते हुए उल्लेख हो चुका है, अतएव, यहां गीतों के संदर्भ में कुछ विशेष नहीं कहा जा रहा।

अजिल्द पुस्तक के मुख पृष्ठ पर धनुष-बाण और बाणों से भरे तरकस का विविध रंगी चित्र अंकित किया गया है जो आकर्षक लग रहा है । पुस्तक के प्रारंभ में ही छोटे- से बाल वीर के हाथ में बंदूक दी गई है किन्तु विशेषता तो यह है कि बाल-वीर के मस्तक पर गांधी टोपी पहनाई गई है । यह इंगित करता है कि वह गांधी-चिन्तन में माननेवाला देश का संरक्षक संतरी है । कवि देश के बालकों को पूर्ण सतर्कताके साथ गांधी-चिन्तन प्रणाली का अनुसरण करने तथा स्वातंत्र्य की सुरक्षा के लिए कटिबद्ध रहने का संदेश देते हैं ।

११- हुआ सबेरा उठो-उठो :

जैसा कि शीर्षक से ही स्पष्ट है, यह पुस्तक छोटे बच्चों में उत्साह, उमंग व साहस भरनेवाले सरल-सरस गीतों का संकलन है ।

यह भी सन् १९७६ ई० में शिक्षा भारती, दिल्ली से प्रकाशित हुई । यह भी २४ पृष्ठों में छपी १५ गीतों से समर पुस्तक है ।

इसमें संकलित गीत भी अन्यत्र प्रकाशित हो चुके हैं । विशिष्ट भाव-धारा के गीतों को एक स्थान में एकत्र करके उसे प्रकाशित करने का यहाँ प्रयास किया गया है ।

अजिल्द पुस्तक के मुखपृष्ठ पर सूर्योदय होने पर कतिपय पक्षी उड़ते दिखाये गये हैं । सूर्य किरणों का संस्पर्श पाकर पुष्प में स्पंदन फैल गया है, यह दिखाया गया है । प्रारंभ में ही पुस्तक के शीर्षक के भावानुसार मुर्गे को बांग देते हुए अंकित किया गया है । यह जागरण का भी प्रतीक है । इसमें संकलित गीत भी राष्ट्रीय जागरण से सम्बंधित हैं ।

द्विवेदी जी द्वारा संपादित कृतियाँ :

१- गांधी अभिनंदन ग्रंथ :

सन् १९४४ ई० में बापू की हीरक जयन्ती के प्रसंग पर सर्वप्रथम प्रकाशित यह ग्रंथ संशोधित एवं परिवर्धित तृतीय संस्करण के रूप में २ अक्टूबर १९६९ ई० गांधी जन्म शताब्दी के सुअवसर पर उत्तर प्रदेश गांधी शताब्दी समिति के द्वारा प्रकाशित किया गया । ~~पुस्तक-कृति~~ प्रस्तुत कृति में सोहनलाल द्विवेदी कृत मात्र एक ही कविता संकलित है जो `युगावतार` शीर्षक से प्रकाशित है । यह कविता जिसकी प्रथम पंक्ति `चल पड़े जिधर दो डग मग में` कवि की प्रसिद्ध रचना है जिसके संदर्भ में पूर्ववर्ती पृष्ठों में चर्चा की जा चुकी है । शेष सभी रचनाएँ हिंदी तथा अन्य भाषा-भाषी कवियों द्वारा रचित हैं । यह हमारे प्रतिपाद्य विषय की सीमा में न आने के कारण इन पर यहाँ विचार नहीं किया जा रहा है ।

२-गांधी शतदल :

यह ग्रंथ भी गांधी शताब्दी वर्ष १९६९ में ही प्रकाशन विभाग, सूचना और प्रसारण मंत्रालय की ओर से प्रकाशित हुआ । इसमें भी द्विवेदी जी की उपर्युक्त `युगावतार` रचना ही अन्य हिन्दी तथा इतर भारतीय भाषा-भाषी कवियों की रचनाओं के साथ प्रकाशित की गई है । इस पर चर्चा की जा चुकी है । तदर्थ इस संदर्भ में यहाँ कुछ नहीं कहा जा रहा ।

३- झण्डा ऊँचा रहे हमारा :

द्विवेदी जी के द्वारा संपादित यह तृतीय सम्पादन है । यह नेशनल पब्लि० हाउस- दिल्ली द्वारा सर्वप्रथम सन् १९७२ ई० में प्रकाशित हुई । श्यामलाल गुप्त पार्षद की 'झण्डा ऊँचा रहे हमारा' जो अति प्रसिद्ध रचना रही उसके अतिरिक्त उनकी अन्य रचनाओं को इसमें संकलित किया गया है । हमारे प्रतिपाद्य विषय से इसका सम्बंध न होने के कारण इन पर यहाँ विचार नहीं किया जा रहा है ।

निष्कर्ष :

पं० सोहनलाल कृत उनकी उपर्युक्त पुस्तकों के परिचयात्मक अनुशीलन के आधार पर निम्नलिखित तथ्य प्रकाश में आते हैं :-

१- द्विवेदी जी की मौलिक कृतियां कुल २७ हैं । इनमें वस्तुगत वैविध्य है । उनकी मौलिक एवं संपादित रचनाओं को पाँच वर्गों में विभाजित किया जा सकता है । ये हैं :- (१) राष्ट्री जागरण विषयक रचनाएँ(२) साँस्कृतिक रचनाएँ (३) साहित्यिक रचनाएँ (४) बाल-मानस से सम्बंधित रचनाएँ और (५) संपादित रचनाएँ । इसकी पृथक तालिका संलग्न है।

२- उक्त समस्त रचनाओं में से कतिपय स्वाधीनता पूर्व की रचनाएँ हैं, तो कतिपय स्वातंत्र्योत्तर कालीन हैं । स्वातंत्र्यपूर्व पाँच राष्ट्रीय रचनाएँ , तीन साँस्कृतिक रचनाएँ, दो साहित्यिक रचनाएँ, तीन-बाल-साहित्य की रचनाएँ तथा एक संपादित रचना का सर्जन किया गया । स्वातंत्र्योत्तर काल में तीन राष्ट्रीय रचनाएँ, ग्यारह बाल-साहित्य की रचनाएँ तथा तीन संपादित रचनाओं का सर्जन किया गया है ।

३- राष्ट्रीय रचनाओं के अंतर्गत विशेषकर स्वाधीनता पूर्व की रचनाओं में कवि सदियों से सोये राष्ट्र को जगाने का भगीरथ प्रयास करते हैं । स्वाधीनता प्राप्ति के निर्धारित लक्ष्य की संपूर्ति के हेतु कवि 'उत्तिष्ठ कौन्तेय' वाली श्रीमद्-भगवद्गीता की उक्ति की भावना और संप्रेरणा लेकर बड़ी उमंग के साथ -

दृढ़मनस्कता लिए हुए समूचे राष्ट्र को उसकी तंद्रा में से जगाने का अर्थात् राष्ट्रीय जागरण का शंखनाद करते हैं । तदर्थ एक ओर अतीतकालीन भारतीय गौरवगाथा गाकर कवि राष्ट्र के सपूतों में देश के प्रति अनुराग एवं ममत्व जागृत करने का प्रयास करते हैं तो दूसरी ओर वर्तमान भारत की दयनीय तथा दारिद्र्यपूर्ण स्थिति का सजीव चित्र अंकित कर राष्ट्र का ध्यान आकर्षित करते हैं और स्वाधीनता प्राप्ति ही इन समस्याओं के समाधान का एकमात्र उपाय है यह निर्दिष्ट करते हैं । बलिदानी भावना का स्रोत प्रवाहित करने की चेष्टा उसी चेतना का एक पक्ष है । किन्तु कवि सदैव इस बात पर सावधान दृष्टिगत होता है कि राष्ट्र के प्रबुद्ध नवयुवक बलिदान या समर्पण करने की अंधाधुंध में कहीं हिंसात्मक मार्ग का अनुसरण न कर लें । तदर्थ वह प्रायः समस्त राष्ट्रीय रचनाओं में जागरण के साथ-साथ बापू के विराट व्यक्ति तत्व का चित्र उभारते हुए उनके अहिंसात्मक मार्ग का अनुसरण करने का साग्रह अनुरोध करता है ।

४- कवि की यह निजी मान्यता है कि भारतीय अहिंसक सेनानी बनने के लिए नवयुवक में कुछ चारित्रिक विशेषताएँ होनी चाहिए । चरित्र-गठन को प्राधान्य देते हुए द्विवेदी जी ने राष्ट्रीय रचनाओं के अतिरिक्त `वासवदत्ता`, `कुणाल` तथा `विषपान` जैसी सांस्कृतिक रचनाओं का सर्जन भी किया और निर्दिष्ट किया कि काम, क्रोध, लोभ, आदि प्रलोभन युक्त प्रभंजनों से विचलित हुए बिना हमें लक्ष्य प्राप्ति की दिशा में अग्रसर होते रहना चाहिए ।

५- द्विवेदी जी का बाल-साहित्य भी उपरिनिर्दिष्ट राष्ट्रीय और सांस्कृतिक चेतना का वहन करता है । राष्ट्रीय जागरण, सांस्कृतिक पुनरुत्थान चरित्र-निर्माण, महापुरुषों के जीवन से आदर्श-बोध, महती आकांक्षा आदि के पक्ष ऐसी कृतियों में पूर्वनिर्दिष्ट राष्ट्रीय और सांस्कृतिक रचनाओं की कोटि में आनेवाली कविताओं और गीतों की भाँति ही उभर कर आये हैं ।

६- इन रचनाओं के कालक्रम तथा युगीन संदर्भ में उनकी भाव-सम्पदा पर विहंगम

दृष्टिक्षेप करने पर निष्कर्ष रूप में हम उनकी काव्य-यात्रा के तीन सोपानों को लक्ष्य कर सकते हैं -

स्वतंत्रता प्राप्ति तक की रचनाओं में राष्ट्रीय-सांस्कृतिक जागरण का प्रधान स्वर लेकर उनका प्रथम सोपान है। द्वितीय सोपान में देश के नव-निर्माण तथा नयी चेतना की आशा-आकांक्षा को वाणी दी गई है। तदनन्तर सम-सामयिक गतिविधियों के सन्दर्भ में मोह-भंग, दुरवस्था के प्रति संवेदना तथा चेतावनी आदि के द्वारा उनका युगानुरूप तीसरा सोपान परवर्तीकाल की रचनाओं का है। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि ये तीनों सोपान अलग-अलग युगीन संदर्भों को उजागर करते हुए भी राष्ट्रीय जागरण के ही महत्वपूर्ण अंग बन जाते हैं। अतः यह निःसंदिग्ध रूप से कहा जा सकता है कि पं० सोहनलाल द्विवेदी अपने युग के एक सशक्त वैतालिक हैं।

उपर्युक्त तथ्यों के प्रकाश में यह कहा जा सकता है कि द्विवेदी जी का कवि-व्यक्ति तत्व एक सुनिश्चित भाव-भूमि पर दृढ़ता केसाथ प्रतिष्ठित होकर युग-युगों के ~~झ्ंं~~ झंझावातों में अडिग या अकम्पित दिखाई पड़ता है। आदि से लेकर अन्त तक उसमें एक-सूत्रता है। वह युग-प्रवाहों में इस प्रकार प्रवहमान नहीं दिखाई पड़ता जो उसे अपनी निजी भूमि से दूर ले जा सके। इस चेतना का एक सर्वाधिक उल्लेखनीय पहलू उनकी सार्वजनीनता अथवा जन कवि के महत्वपूर्ण रूप का है। उनकी रचनाएँ जिस प्रकार सामाजिक तथा आर्थिक वर्गों की समस्त भूमियों को स्पर्श करती हैं, उसी प्रकार वयक्रम की संस्कार और मनोवृत्ति की भिन्नता को समुचित न्याय-भावना देते हुए उनकी चेतना के साथ सामंजस्य स्थापित करती हैं। नवयुवकों तथा गंभीर विचारकों के लिए लिखी गयी रचनाएँ ~~जो~~ उनके महा-कवित्व ~~से~~ को प्रतिस्थापित करती हैं, उनके अतिरिक्त बाल-साहित्य और शिशुओं के लिए गीत और रोचक कविताएँ प्रस्तुत करने वाले कवि ने वस्तुतः राष्ट्रीय और सामाजिक दायित्व का निर्वाह किया है। सामान्य तथा एक प्रतिष्ठित कवि का

ध्यान अल्प वयस्क जन मानस की ओर कम जाता है और यह भ्रान्त धारणा बन जाती है कि उनके लिए काव्य रचना छोटे या आरंभिक कवियों का काम है। पूर्ववर्ती विवेचन से यह स्वयं सिद्ध है कि द्विवेदी जी ऐसी हीन या भ्रान्त धारणा से ग्रस्त नहीं हैं। देश की पीढ़ी के साथ ऐसे व्यापक दायित्व का निर्वाह ही उन्हें सही अर्थों में राष्ट्रीय जागरण के कवि के रूप में प्रतिष्ठित करता है और इस पक्ष पर विस्तार से परवर्ती अध्याय में विचार किया जा रहा है।

--

वर्गीकृत रचनाएँ

क्रम	राष्ट्रीय रचनाएँ	साँस्कृतिक रचनाएँ	(स्वातंत्र्य पूर्व) साहित्यिक रचनाएँ	बाल-साहित्य	संपादित रचनाएँ
१-	भैरवी १९४१	१-वासवदत्ता १९४२	१-चित्रा १९४३	१-पाँच कहानियाँ (पद्य) १९४०	१-गांधी अभिनंदन ग्रंथ १९४४
२-	प्रभाती १९४४	२- कुणाल १९४२	२- वासन्ती १९४३	२-सात कहानियाँ (पद्य) १९४०	
३-	पूजागीत १९४४	३-विषपान १९४६		३-मोदक १९४० (अप्राप्य)	
४-	युगाधार १९४४				
५-	सेवाग्राम १९४६				
			स्वातंत्र्योत्तरकालीन		
६-	चेतना १९४८ (५४ पुनः)			४-शिशुभारती १९४९	२- गांधी अभिनंदन ग्रंथ १९६९
७-	जयगांधी १९५६			५- बाल भारती १९५३	३- गांधी शतदल १९६९
८-	मुक्तिगंगा १९७२			६- दूध बतासा १९५४	४- झंडा ऊँचा रहे हमारा १९६२
				७- बाँसुरी १९५७	
				८- हंसो हंसाओ १९६०	
				९- नेहरू चाचा १९६३	
				१०- दस कहानियाँ (पद्य) १९६३	
				११- बच्चों के बापू १९६९	
				१२- शिशु गीत १९७१ (७८ पुनः)	
				१३- हम बालवीर १९७६	
				१४- हुआ सबेरा उठो-उठो १९७६	

सन्दर्भ सूची :

१- 'वंदना के इन स्वरों में एक स्वर मेरा मिला लो'।

२- सोहनलाल द्विवेदी 'युगाधार' वक्तव्य से उद्धृत ।

३- दृष्टव्य- 'वासवदत्ता' आमुख पृष्ठ-२

४- दृष्टव्य- वही, शीर्षक वही ।

५- सोहनलाल द्विवेदी, 'वासवदत्ता' (प्रथम संस्करण) की भूमिका से उद्धृत

६- सोहनलाल द्विवेदी, 'कुणाल', निवेदन से उद्धृत ।

७- सोहनलाल द्विवेदी, 'वासन्ती', पृ०

८- सोहनलाल द्विवेदी, 'प्रभाती' की भूमिका से उद्धृत, पृ० ३-४

९- सोहनलाल द्विवेदी, 'युगाधार' वक्तव्य से उद्धृत ।

१०- सोहनलाल द्विवेदी, 'युगाधार' वक्तव्य से उद्धृत ।

११- सोहनलाल द्विवेदी, 'विषपान' विज्ञप्ति से उद्धृत ।

१२- सोहनलाल द्विवेदी, 'सेवाग्राम' निवेदन से उद्धृत ।

१३- सोहनलाल द्विवेदी, 'चेतना' की विज्ञप्ति से उद्धृत ।

१४- सोहनलाल द्विवेदी, 'जय गांधी', परिचय से उद्धृत ।

१५- सोहन लाल द्विवेदी, 'मुक्तिगंधा', पुरोवाक् से उद्धृत ।

१६- सोहनलाल द्विवेदी, 'बालभारती' से उद्धृत ।

१७- 'दूध बतासा' से उद्धृत ।

१८- 'वर्धा से श्री प्रभुदयाल विद्यार्थी' ने एक पत्र में लिखा है कि जब यह कविता बापू जी को सुनाई गई, तब वे बहुत हंसे ।

-सोहनलाल द्विवेदी, 'बच्चों के बापू', 'एक शब्द'

१९- 'बच्चों के बापू', सोहनलाल द्विवेदी, एक शब्द से उद्धृत ।

२०- 'बच्चों के बापू' सोहनलाल द्विवेदी, कुछ सम्मतियों से उद्धृत ।

--